RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 जुलाई 2026

अंक 478 ● जुलाई 2026

चकमक

बाल विज्ञान पत्रिका

उड़ते-उड़ते जूता उनका

जा पहुँचा जापान में

इब्न बतूता खड़े रह गए

मोची की दुकान में

मूल्य ₹ 50

तुम भी बनाओ

आम की गुठली से फ्लेमिंगो

रोहित कोकिल

जुगाड़:
आम की सूखी गुठली, गत्ते का टुकड़ा, तार, मास्किंग टेप, कैंची/कटर, गोंद, रंग और ब्रश

1 आम की गुठली को धोकर अच्छी तरह सुखा लो।

2 गत्ते पर फ्लेमिंगो की गरदन, सिर और पूँछ बनाकर काट लो।

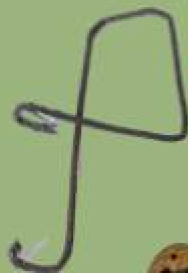

3 तार से फ्लेमिंगो की टाँगों का आकार बना लो।

4 तार और गत्ते पर मास्किंग टेप लपेटो।

5 गुठली से धड़ बन जाएगा।

6 अब सभी भागों को जोड़कर फ्लेमिंगो बनाओ। चाहो तो रंग भर लो।

7 अपने फ्लेमिंगो को चित्र में दिखाए तरीके से गत्ते के एक टुकड़े के ऊपर चिपका सकते हो।

ऐसी ही अन्य बेकार और प्राकृतिक वस्तुओं का इस्तेमाल करके तुम और चीज़ें भी बना सकते हो। हमें बताना कि तुमने क्या-क्या बनाया।

अंक 478 जुलाई 2026

चकमक

इस बार

तुम भी बनाओ -
आम की गुठली से फ्लेमिंगो
रोहित कोकिल 2

भूलभुलैया 4

आलसी आदमी के सम्मान में
यायावर 5

दुनिया का सबसे पुराना तैरता शहर
ऐना ब्रैसनिन् 8

क्यों-क्यों 12

बतूता का जूता
सर्वेश्वरदयाल सक्सेना 16

बतूता का जूता - टिप्पणी
प्रभात 17

बतूता का जूता - टिप्पणी
नरेश सक्सेना 18

अन्तर ढूँढो 19

शिकाकु 19

आखिर मुसीबत टल ही गई
अफरोज़ जहाँ 22

मशरूम के नीचे
वी सुतेयेव 26

चित्रपहेली 28

मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 23
आर एस रेश्मा राज, ए पी माधवन व साथी 30

तुम भी जानो 31

मच्छरदानी क्रान्ति :
अफ्रीका से दुनिया भर में
पीयूष सेकसरिया 32

माथापच्ची 34

मेरा पन्ना 36

तुम भी जानो 43

आवरण चित्र: अल-हरीरी की *मकामात* की 1237 में तैयार की गई सचित्र पांडुलिपि से लिया गया तेरहवीं सदी का एक चित्र।

सम्पादक
विनता विश्वनाथन
कनक शशि अनिल

सह सम्पादक
कविता तिवारी

विज्ञान सलाहकार
सुशील जोशी
उमा सुधीर

डिज़ाइन
कनक शशि अनिल

सलाहकार
सी एन सुब्रह्मण्यम्
शशि सबलोक

वितरण
झनक राम साहू

एक प्रति : ₹50

सदस्यता शुल्क
(रजिस्टर्ड डाक सहित)
वार्षिक : ₹ 800
दो साल : ₹ 1450
तीन साल : ₹ 2250

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:
बैंक का नाम व पता: स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल
खाता नम्बर: 10107770248
IFSC कोड: SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in, circulation@eklavya.in
वेबसाइट: https://www.eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine

चित्र: नरेश पासवान

आलसी आदमी के सम्मान में

यायावर, उर्फ रमेश बिल्लौरे
कौसानी, उत्तराखण्ड, अगस्त 1995

चित्र: प्रशान्त सोनी

बारिश, वाह! इससे अच्छा मौसम भी
कोई होता है
कुछ न करने के लिए बहाना
इससे अच्छा भी कोई होता है
बस, लेटे हुए
बीते सारा दिन
गर्म पकौड़ियाँ और चाय
और थोड़ी चाय
और थोड़ी पकौड़ी
और थोड़ी बारिश
बिजली का चमकना
बादल का गरजना
कितना प्यारा लगता है
बादलों का दल के दल
चले आना
बरसते रहना दिन भर
सुबह से शाम तक
आराम से लेटे-लेटे देखना
खिड़की से बाहर
घाटी में तैरते बादल
कोहरे में अदृश्य होते
फिर प्रकट होते
नदी, खेत, पहाड़
कुछ न करने के लिए
इससे अच्छा मौसम भी
कोई होता है?

वैसे कुछ न करने के लिए
शीत का मौसम भी
क्या बुरा है?
कुछ न करने की शुरुआत
सुबह से होती है
स्नान?
कोई पागल ही नहाएगा
इस मौसम में
ध्यान
हाँ, खाने का ध्यान तो
रखना ही होता है
और बिना खाए
कोई कैसे सो सकता है?
रज़ाई ओढ़े
आग तापते
देखते रहो खिड़की के शीशों के पार
दूर पहाड़ों पर गिरती बर्फ़
हाँ, बटर टोस्ट के साथ
गर्म कॉफी का प्याला
भरता रहे लगातार
एक सुन्दर सपना साकार
कुछ न करने के लिए
इससे अच्छा मौसम भी
कोई हो सकता है भला?
आराम से बढ़कर भी
कोई हो सकता है काम?
या लेटने से बढ़कर कोई व्यायाम?

वैसे कुछ न करने के लिए
गर्मी का मौसम भी
क्या बुरा है?
खिड़की से परे
देखते रहो
सामने फैली नदी घाटी
बर्फ से ढँकी पर्वत श्रेणियाँ
जहाँ तक जाती हैं निगाहें
उस सारे इलाके के मालिक तुम
कल्पना में पहुँचो
हर हिम शिखर पर
लेटे-लेटे
थककर सो जाओ
पता ही न चले
कब सुबह दोपहर में
बदलती है
कब शाम होती है
और फिर रात तो
सोने के लिए ही होती है
वैसे तो सच ये है
कि सोने के लिए ही
बना है हर मौसम
जिसने भी बनाई हो
यह धरती, यह कुदरत
जिसने भी तय किए हों मौसम
सोच-समझकर ही किया होगा
उसे जितना भी धन्यवाद दें कम है।

रमेश बिल्लौरे

रमेश बिल्लौरे लेखक, कवि और पर्यावरण चिन्तक थे। वे नर्मदा घाटी से जुड़े मुद्दों पर एकदम शुरुआती दौर से काम कर रहे थे। नर्मदा पर बने बाँधों के सामाजिक और पर्यावरणीय प्रभावों पर उन्होंने कई लेख लिखे। उन्होंने क्लॉड अ के साथ मिलकर *डैमिंग द नर्मदा: इंडियाज़ ग्रेटेस्ट प्लांड डिज़ास्टर* नामक किताब भी लिखी। नर्मदा घाटी की लोक-संस्कृति का विस्तृत दस्तावेज़ीकरण भी उन्होंने किया था। वे यायावर के नाम से कविताएँ लिखा करते थे। असल में वे यायावर यानी घुमक्कड़ ही थे। उनका कोई स्थायी ठिकाना नहीं था। वे देश भर में घूमते रहे। ट्रेन से जाते हुए उन्हें जहाँ कोई सुन्दर प्राकृतिक जगह दिखती वे वहीं उतरकर रहने का ठिकाना ढूँढने लगते। अपनी इन यात्राओं, छोटी-छोटी घटनाओं और जीवन के अनुभवों को वे बेहद रोचक ढंग से सुनाते थे। 10 मई 2026 को वे नहीं रहे पर उनकी कविताएँ, कहानियाँ और किस्से हमारे बीच निरन्तर बने रहेंगे।

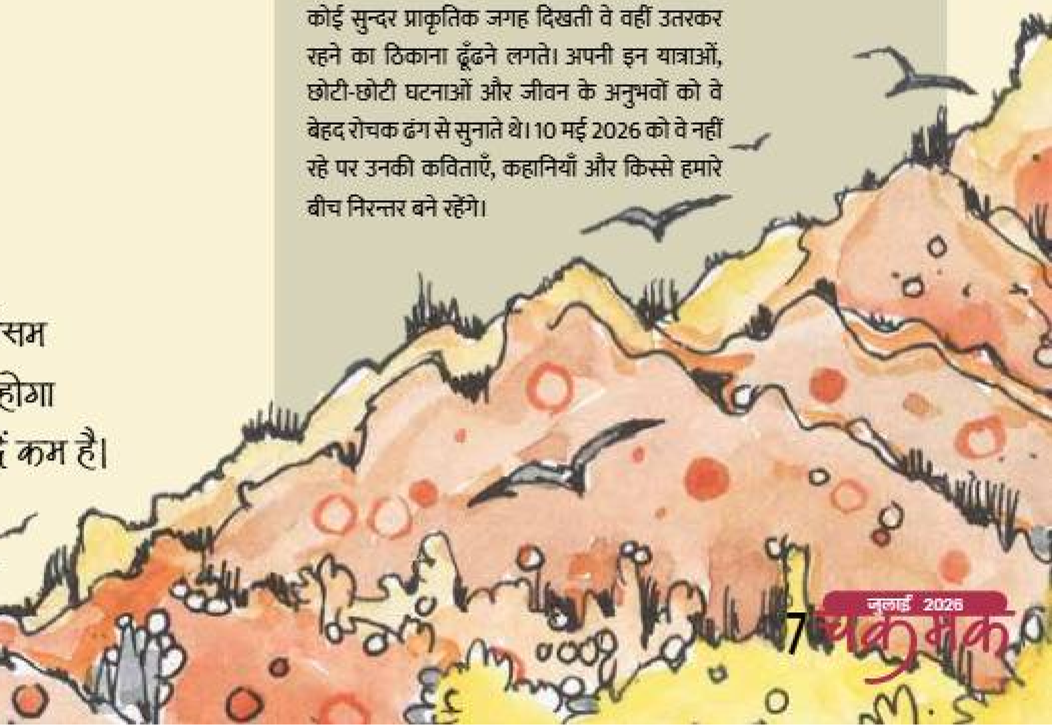

दुनिया का सबसे पुराना तैरता शहर

मिट्टी, पानी और लकड़ी पर खड़ा वेनिस

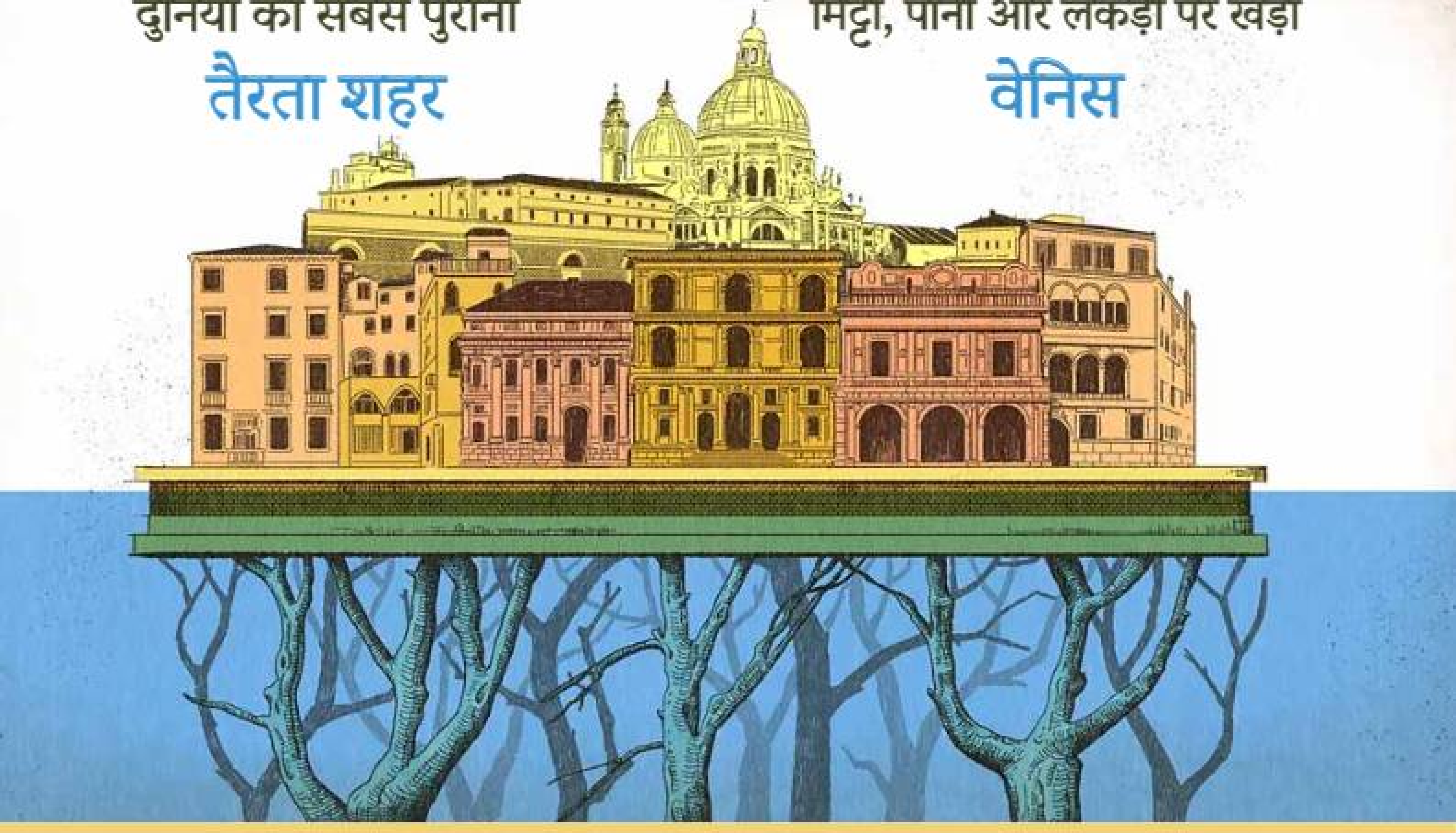

ऐना ब्रैसनिन्	चित्र: इमैनुएल लाफ़ॉन्ट

ज़्यादातर आधुनिक इमारतें इस हिसाब से बनाई जाती हैं कि वे लगभग 50 साल तक टिकें। लेकिन यूरोप के ऐड्रिऐटिक समुन्दर में स्थित वेनिस एक ऐसा शहर है जिसे प्राचीन इंजीनियरिंग की अनोखी तकनीक ने सिर्फ लकड़ी के सहारे 1600 से भी ज़्यादा सालों से पानी के बीच टिकाए रखा है।

25 मार्च को वेनिस 1606 साल का हो गया है। यहाँ के निवासी कहते हैं कि उनका शहर असल में एक उल्टा जंगल है। ये शहर लकड़ी की लाखों छोटी बल्लियों की नींव पर बना है। इन बल्लियों को ज़मीन में इस तरह गाड़ा गया है कि उनके नुकीले सिरे नीचे की ओर हैं। ये लार्च, बाँज, फाकुल, चीड़, राई और चिलबिल जैसे पेड़ों की लकड़ी से बनी हैं। इनकी लम्बाई 3.5 मीटर से लेकर 1 मीटर से भी कम है। सदियों से यही बल्लियाँ पत्थर के महलों और ऊँचे घण्टाघरों का भार उठाए हुए हैं। यह इंजीनियरिंग का एक अद्‌भुत उदाहरण है जिसमें भौतिकी और प्रकृति की शक्तियों का शानदार इस्तेमाल किया गया है।

ज़्यादातर आधुनिक इमारतों में जो काम मज़बूत कांक्रीट और लोहे की नींव करती है, वही काम यह 'उल्टा जंगल' सदियों से करता आ रहा है। लेकिन इतनी मज़बूत होने के बावजूद आज की बहुत कम नींवें वेनिस की नींव जितनी लम्बे समय तक टिक सकती हैं। स्विट्ज़रलैंड के प्रोफ़ेसर एलेक्जेंडर पुज़रिन* कहते हैं, "आज कांक्रीट या लोहे के खम्भों को 50 साल तक टिकने की गारंटी के साथ बनाया जाता है। हो सकता है वे इससे ज़्यादा समय तक टिक जाएँ, लेकिन घरों और औद्योगिक ढाँचों के निर्माण में मानक उम्र 50 साल की होती है।"

*ज़्यूरिख में ETH यूनिवर्सिटी में जियोमैकेनिक्स और जियोसिस्टम्स इंजीनियरिंग में कार्यरत।

पुज़रिन बताते हैं कि अपने पूरे करियर में उन्हें सिर्फ एक बार किसी इमारत के निर्माण के लिए 500 साल की गारंटी देने को कहा गया था। यह इज़रायल में एक बहाई मन्दिर के निर्माण की बात है। वे कहते हैं, "मैं थोड़ा हैरान था क्योंकि ऐसी माँग असामान्य थी। मैं थोड़ा घबरा भी गया था क्योंकि वे चाहते थे कि मैं यह गारंटी लिखित में दूँ। मैंने तेल अवीव (इज़राइल की राजधानी) में अपने बॉस को फोन किया। वे एक बेहद अनुभवी, बुज़ुर्ग इंजीनियर थे। मैंने उनसे कहा, 'हम क्या करें? वे 500 साल की गारंटी चाहते हैं।' उन्होंने कुछ पल रुककर जवाब दिया, '500 साल? हस्ताक्षर कर दो। हम में से कोई भी तब यहाँ नहीं होगा।'"

लम्बे समय तक टिकने वाली इमारतें

बल्लियों की तकनीक की यह नींव कई कारणों से अद्‌भुत है। इन इमारतों की ज्यामिति, सदियों तक टिके रहने की क्षमता और इसका विशाल पैमाना तीनों ही इसे खास बनाते हैं। किसी को भी ठीक-ठीक नहीं पता कि शहर के नीचे ऐसी कितनी लाखों बल्लियाँ गड़ी हैं। लेकिन अकेले रियाल्टो पुल की नींव में ही 14,000 लकड़ी की बल्लियाँ हैं, जो बहुत पास-पास लगी हैं। वहीं 832 ईस्वीं में बने सैन मार्को बेसिलिका के नीचे 10,000 ओक के पेड़ों की लकड़ी का इस्तेमाल किया गया है।

वेनिस यूनिवर्सिटी में एन्वायरमेंटल केमिस्ट्री एण्ड कल्चरल हेरिटेज की प्रोफेसर कैटेरिना फ्रांसेस्का इज़्ज़ो कहती हैं, "मैं वेनिस में ही पैदा हुई और पली-बढ़ी। बाकी सब लोगों की तरह मुझे भी बचपन से ही पता था कि वेनिस की इमारतों के नीचे कैडोरे क्षेत्र के पेड़ों की लकड़ी लगी है। लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि इन बल्लियों को ज़मीन में कैसे गाड़ा जाता था, इनकी गिनती कैसे की जाती थी। न ही यह पता था कि 'बट्‌टीपली' यानी 'खम्भे गाड़ने वाले मज़दूरों का काम कितना महत्वपूर्ण था। उनके अपने गीत भी होते थे। तकनीकी और प्रौद्योगिकी के नज़रिए से यह बहुत दिलचस्प है।"

बट्‌टीपली अपने हाथों से भारी हथौड़े चलाते हुए बल्लियों को ज़मीन में गाड़ते थे। लय बनाए रखने के लिए वे काम के दौरान एक पुराना गीत भी गाते थे। गीत की लय देर तलक याद रहने वाली और बार-बार दोहराई जाने वाली थी। उसके बोलों में वेनिस, उसके

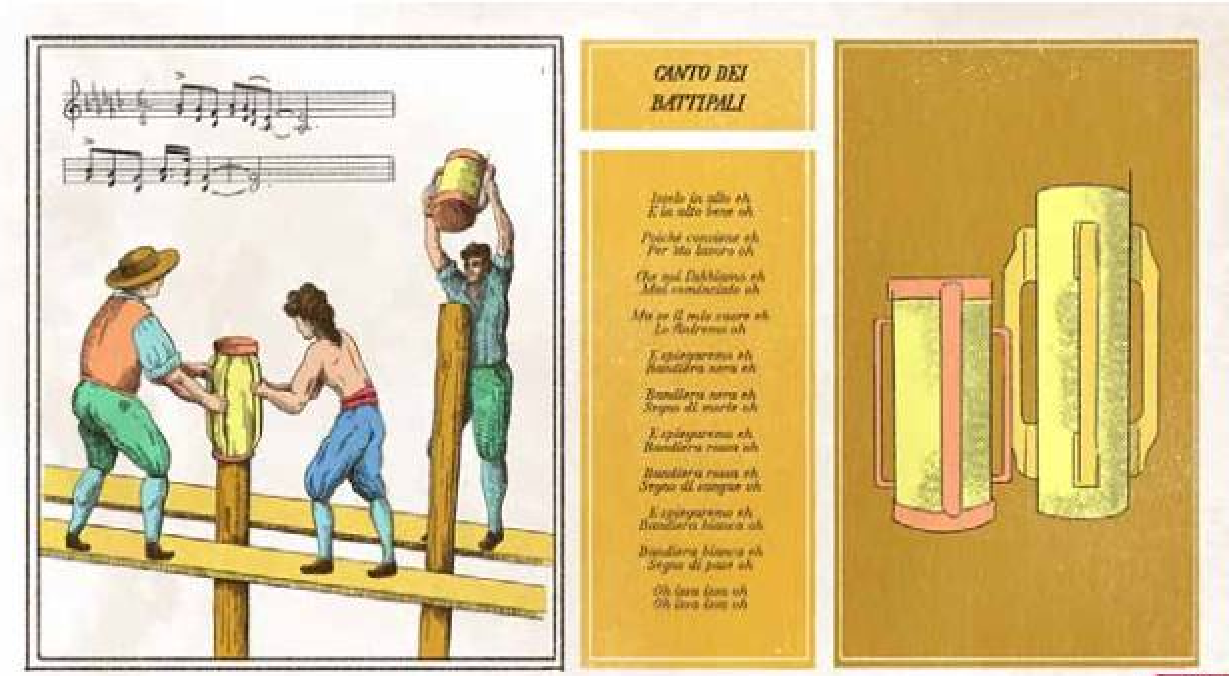

गणराज्य की शान और कैथोलिक धर्म की तारीफ की जाती थी। साथ ही उस समय के उनके दुश्मन तुर्कों के नाश की कामना की जाती थी।

बल्लियों को जितना हो सके, उतना गहरा गाड़ा जाता था। उन्हें तब तक ठोका जाता था, जब तक कि वे पूरी तरह धँस न जाएँ। यह काम इमारत के बाहरी किनारे से शुरू होकर धीरे-धीरे नींव के बीच वाले हिस्से तक पहुँचता था। आम तौर पर हर एक वर्ग मीटर में कुण्डली के आकार में नौ बल्लियाँ ठोंकी जाती थीं। फिर बल्लियों के ऊपरी हिस्सों को आरी से काटकर एक समतल सतह बनाई जाती थी। यह सतह समुद्र तल से नीचे रहती थी।

इसके ऊपर लकड़ी के आड़े तख्ते (ज़ैटेरोनी) या बीम (माडिएरी) बिछाए जाते थे। घण्टाघरों के मामले में, ये बीम या तख्ते 50 सेंटीमीटर तक मोटे होते थे। अन्य इमारतों में इनकी मोटाई 20 सेंटीमीटर तक की होती थी। बाँज की लकड़ी सबसे मज़बूत और टिकाऊ मानी जाती थी, लेकिन यह सबसे महँगी भी थी। (बाद में, बाँज का इस्तेमाल सिर्फ जहाज़ बनाने के लिए किया जाने लगा। यह इतनी महँगी थी कि इसे कीचड़ में गाड़ना ठीक नहीं समझा जाता था।) लकड़ी की इस नींव के ऊपर ही मज़दूर इमारत के पत्थर रखते थे और निर्माण का काम आगे बढ़ता था।

पेड़ संरक्षण की पद्धति की शुरुआत

वेनिस गणराज्य ने जल्द ही अपने जंगलों की रक्षा करना शुरू कर दिया ताकि निर्माण-कार्यों के साथ-साथ जहाज़ों के लिए भी पर्याप्त लकड़ी मिल सके। इटली की नेशनल काउंसिल फॉर रिसर्च के बायोइकोनॉमी संस्थान के रिसर्च डायरेक्टर निकोला मैकियोनी बताते हैं, “वेनिस ने ही ‘सिल्विकल्चर’ का आविष्कार किया था। सिल्विकल्चर पेड़ों को उगाने और उनकी देखभाल करने की योजनाबद्ध पद्धति है। इटली में सिल्विकल्चर से जुड़ा पहला आधिकारिक दस्तावेज़ 1111 ईस्वी का दस्तावेज़ है। इसमें जंगलों को पूरी तरह खत्म किए बिना उनका इस्तेमाल करने के नियम विस्तार से बताए गए हैं।” मैकियोनी के अनुसार, संरक्षण की ये पद्धतियाँ दस्तावेज़ तैयार होने से कई साल पहले से ही अपनाई जा रही होंगी। “यही वजह है कि वेनिस की फिएम घाटी आज भी घने देवदार के जंगलों से ढँकी हुई है। इंग्लैंड जैसे देशों में तो सोलहवीं सदी के मध्य में ही लकड़ी की कमी होने लगी थी।” वे आगे बताते हैं।

वेनिस के नींव की खासियत

वेनिस अकेला ऐसा शहर नहीं है जिसकी इमारतों की नींव बल्लियों पर टिकी है। लेकिन इसकी नींव बनाने में कुछ ऐसी खास बातें हैं जो इसे दूसरों से अलग बनाती हैं। एम्स्टर्डम भी एक ऐसा ही शहर है जिसकी कई इमारतों की नींव बल्लियों पर बनी है। यहाँ और उत्तरी यूरोप के कई अन्य शहरों में ये बल्लियाँ तब तक नीचे गाड़ी जाती हैं जब तक कि वे नीचे मौजूद कठोर चट्टानी परत (bedrock) तक न पहुँच जाएँ। इसके बाद ये बल्लियाँ लम्बे खम्बों या किसी मेज़ के पायों की तरह काम करती हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ इलिनोइस में आर्किटेक्चर के प्रोफेसर थॉमस लेस्ली कहते हैं, "अगर चट्टानी परत ज़मीन की सतह के करीब हो, तो यह तरीका ठीक है।" लेकिन कई इलाकों में चट्टानी परत इतनी गहराई में होती है कि बल्लियाँ वहाँ तक पहुँच ही नहीं सकतीं। अमेरिका में मिशिगन झील के किनारे जहाँ लेस्ली रहते हैं, वहाँ चट्टानी परत ज़मीन की सतह से 30 मीटर नीचे हो सकती है। "इतने ऊँचे पेड़ ढूँढना आसान नहीं होता। 1880 के दशक में शिकागो के लोगों ने एक पेड़ के तने के ऊपर दूसरा तना रखकर उन्हें ज़मीन में गाड़ने की कोशिश की थी। लेकिन जैसा कि तुम अन्दाज़ा लगा सकते हो, यह तरीका काम नहीं आया। आखिर में उन्हें समझ आया कि इमारतों को सहारा देने के लिए वे मिट्टी के घर्षण (friction) पर भी निर्भर रह सकते हैं।"

इस तकनीक का आधार एक सरल-सा विचार है। ज़मीन में जितनी ज़्यादा बल्लियाँ गाड़ी जाएँगी, बल्लियों और मिट्टी के बीच उतना ही ज़्यादा घर्षण होगा। इससे मिट्टी मज़बूत होगी। लेस्ली कहते हैं, "इस तकनीक की सबसे होशियारी वाली बात यह है कि इसमें भौतिकी के सिद्धान्त का इस्तेमाल किया गया है... इसकी खूबसूरती यह है कि आप मिट्टी के अपने स्वाभाविक गुणों का इस्तेमाल करके इमारतों को सहारा दिया जाता है। जब किसी जगह पर बहुत सारी बल्लियाँ पास-पास गाड़ी जाती हैं, तो मिट्टी उन्हें मज़बूती से 'जकड़' लेती है। वैज्ञानिक इसे हाइड्रोस्टैटिक दबाव (hydrostatic pressure) कहते हैं।"

वेनिस में भी यही सिद्धान्त काम करता है। वहाँ की लकड़ी की बल्लियाँ इतनी लम्बी नहीं होतीं कि नीचे की कठोर चट्टानी परत तक पहुँच सकें। वे घर्षण की मदद से इमारतों को सहारा देती हैं। लेकिन निर्माण के इस तरीके का इतिहास और भी पुराना है। पहली सदी के रोमन इंजीनियर और आर्किटेक्ट विट्रुवियस ने भी इस तकनीक का ज़िक्र किया था। रोमन लोग पानी में गाड़ी गई बल्लियों का इस्तेमाल पुल बनाने के लिए करते थे। चीन में पानी के बहाव को नियंत्रित करने वाले द्वार (water gates) भी घर्षण वाली इसी तकनीक से बनाए जाते थे। पुज़रिन बताते हैं कि लगभग 800 साल पहले एज़्टेक लोग भी मेक्सिको सिटी में यही तरीका अपनाते थे। बाद में स्पेनियों ने उस प्राचीन शहर को तोड़ दिया और उसी जगह अपना कैथोलिक गिरजाघर बना दिया। "एज़्टेक लोग अपने वातावरण के हिसाब से इमारतें बनाना स्पेनिश लोगों की तुलना में कहीं बेहतर जानते थे। स्पेनिश लोगों को अब इस बड़े गिरिजाघर को लेकर भारी दिक्कतों का सामना करना पड़ रहा है क्योंकि इसका फर्श अलग-अलग जगहों पर अलग-अलग ढंग से धँस रहा है।" पुज़रिन इसे भू-तकनीकी (geotechnical) इंजीनियरिंग की मशहूर नाकामियों में से एक बताते हैं। वे कहते हैं कि मेक्सिको सिटी का यह कैथेड्रल और कुल मिलाकर पूरी मेक्सिको सिटी इस बात का एक उदाहरण है कि किसी भी इमारत की नींव में क्या-क्या गड़बड़ियाँ हो सकती हैं।

डेढ़ हज़ार साल से ज़्यादा समय तक पानी में रहने के बावजूद वेनिस की नींव काफी मज़बूत साबित हुई है। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि उन्हें कोई नुकसान नहीं पहुँचता।

पेज 20 पर जारी

क्यों क्यों

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:
यदि तुम्हें इन्सान के बदले और कुछ भी बनने का मौका मिले तो तुम क्या बनना चाहोगे, और क्यों?

इस सवाल के लिए तुम्हारे बहुत सारे दिलचस्प जवाब मिले। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो। इसके कुछ अन्य जवाब हम अगले अंक यानी जुलाई में भी प्रकाशित करेंगे।

सितम्बर अंक का सवाल है:

तुम्हारे हिसाब से नहाने के लिए कौन-सा समय अच्छा होता है, और क्यों? वैसे तुम किस समय नहाते हो, और क्यों?

तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें merapanna.chakmak@eklavya.in पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर व्हॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

चकमक

एकलव्य फाउंडेशन,
जमनालाल बजाज परिसर,
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश

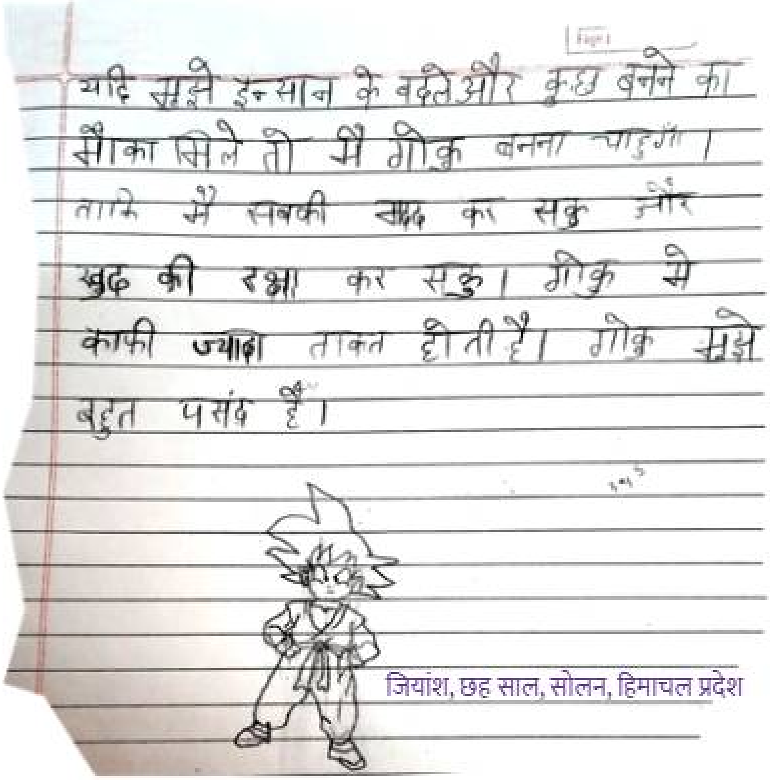

यदि मुझे इन्सान के बदले और कुछ बनने का मौका मिले तो मैं गोकू बनना चाहुंगा। ताकि मैं सबकी मदद कर सकु और खुद की रक्षा कर सकु। गोकू से काफी ज्यादा ताकत होती है। गोकू मुझे बहुत पसंद है।

जियांश, छह साल, सोलन, हिमाचल प्रदेश

मैं क्रिकेट की गेंद बनना चाहूँगा। मेरा मन करता है कि मैं गेंद बनकर अपने दोस्त विकेट/गिल्ली को जोर से गले लगाऊँ और उसे नीचे गिरा दूँ। गेंद बनकर मैं अपनी दो अलग-अलग पहचान दिखाना चाहूँगा – एक तरफ से चमकदार और दूसरी तरफ से खुरदरी। मैं किसी अच्छे गेंदबाज़ के हाथ में आऊँ ताकि विज्ञान के साथ हवा में घूम सकूँ और मैग्नस प्रभाव से स्विंग कर सकूँ। मैं अपने दुश्मन बल्ले को आउट कर दूँ और पूरे मैदान में खुशी की आवाज़ गूँज उठे। मुझे ऐसा लगता है कि अगर मैं गेंद बन जाऊँ, तो गेंद की कम्पनी कू-कू बारा का पक्षी मेरा पालतू जानवर बन जाएगा।

हितार्थ चोपड़ा, पाँचवीं, हेरिटेज एक्सपीरियंसल लर्निंग स्कूल, गुरुग्राम, हरियाणा

मैं बन्दर बनना चाहूँगा। मुझे बन्दर बहुत अच्छे लगते हैं। वे पेड़ों पर बहुत जल्दी चढ़ जाते हैं और एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर कूदते हैं। बन्दरों को खेलना और मस्ती करना बहुत पसन्द होता है। उन्हें देखकर बच्चे भी खुश हो जाते हैं। बन्दर जंगल में अपने दोस्तों और परिवार के साथ रहते हैं। छोटे बन्दर अपनी माँ के साथ खेलते हैं। यह देखने में बहुत प्यारा लगता है। बन्दर फल और केले खाना पसन्द करते हैं। वे बहुत तेज और समझदार होते हैं। मुझे बन्दरों की उछल-कूद बहुत अच्छी लगती है। वे कभी शान्त नहीं बैठते और हमेशा कुछ न कुछ करते रहते हैं। कई बार वे लोगों की नकल भी करते हैं, जिससे सबको हँसी आती है।

अगर मैं बन्दर बनूँगा, तो मैं पूरे दिन पेड़ों पर चढ़ूँगा, खेलूँगा और अपने दोस्तों के साथ मज़े करूँगा। मुझे खुली हवा में रहना अच्छा लगेगा।

शिवम कबाडी, पाँचवीं, सावित्रीबाई फुले अँग्रेज़ी माध्यम विद्यालय, मोशी, पुणे, महाराष्ट्र

मैं स्पाइडर-मैन बनना चाहूँगा। मैं जब साइकिल चलाता हूँ तो बहुत थक जाता हूँ और मुझे बहुत थकान महसूस होती है। अगर मैं स्पाइडर-मैन बन जाऊँ तो मुझे थकान नहीं होगी। अगर मुझे घर जाना हो तो मैं मकड़ी का जाला छोड़ूँगा और घरों से लटकते हुए आसानी से अपने घर तक पहुँच जाऊँगा। इस तरह मेरा समय भी बचेगा और मैं थके बिना घर पहुँच जाऊँगा।

नवदीप सिंह, छठवीं, नानकमत्ता पब्लिक स्कूल, नानकमत्ता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

मैं चीता बनना चाहता हूँ क्योंकि चीता बहुत तेज़ भागता है और जंगल की खुली हवा में रहता है। अन्य जानवर उसके मुकाबले में तेज़ नहीं भाग सकते।

आरण्या पैकर, आठवीं, जवाहर नवोदय विद्यालय, सरगुजा, छत्तीसगढ़

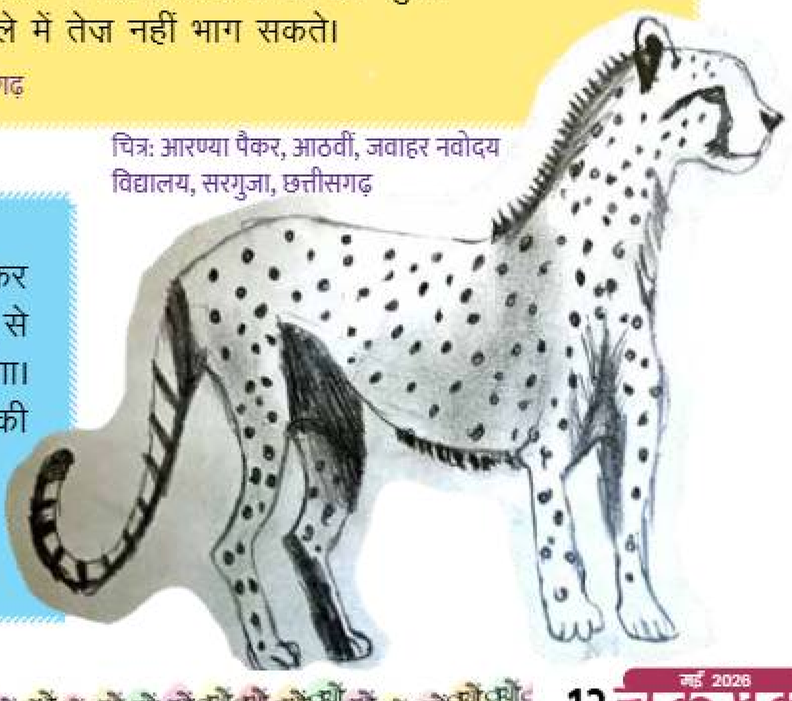

चित्र: आरण्या पैकर, आठवीं, जवाहर नवोदय विद्यालय, सरगुजा, छत्तीसगढ़

मैं आग बनूँगा ताकि लोगों के घर में जलकर उनके लिए खाना पका सकूँ। और ठण्ड से ठिठुर रहे लोगों को गर्मी देकर राहत दे सकूँगा। यह काम मैं विशेष तौर पर सीमा पर देश की रक्षा करते सैनिकों के लिए करना चाहूँगा।

गौरव चौहान, ग्यारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

क्यों क्यों

मैं यूनिकॉर्न बनना चाहूँगी क्योंकि मुझे उड़ना अच्छा लगता है। वो कूदता है एक जगह से दूसरी जगह। मैं अपने यूनिकॉर्न दोस्तों के साथ खेलती हूँ। वो बहुत सुन्दर होता है। यूनिकॉर्न का केक खाते हैं। यूनिकॉर्न परी के साथ रहते हैं।

अनन्या जुनेजा, दूसरी, माउंट ओल्पियस स्कूल, गुरुग्राम, हरियाणा

मैं शेर बनूँगा क्योंकि शेर को कभी पढ़ना-लिखना नहीं पड़ता, ना ही कमाना पड़ता है। बस एक बड़ा शिकार पकड़ो और फिर एक महीने आराम से रहो।

विराट, सातवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, ग्राम पाड़ा, हरियाणा

अगर हमें इन्सान के बदले कुछ और बनने का मौका मिले तो मैं हिरन बनना चाहूँगी। हिरन एक ऐसा पशु है जो बल से नहीं बुद्धि से काम लेता है। वह बहुत चतुर होता है। यदि उस पर कोई पीछे से वार करे तो उसे पहले ही पता चल जाता है और वह भाग जाता है। उसकी रफ्तार बहुत तेज़ होती है। इसलिए शेर जैसे ताकतवर पशु भी उसे पकड़ नहीं पाते हैं और हिरण मुसीबत में घबराता नहीं है। वह धैर्य से काम लेता है और अपने को सुरक्षित कर लेता है।

मुस्कान यादव, आठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला जेरवारा, सागर, मध्य प्रदेश

मैं कौआ बनना चाहूँगा, अगर मुझे ऐसा मौका कहीं मिले कि मैं इन्सान के बदले कुछ और बनूँ। कौआ इसीलिए क्योंकि आज तक किसी ने भी कौए के रंग-रूप को देखकर उसे पिंजड़े में बन्द करने तक की नहीं सोची है। भले ही कौआ किसी के लिए अच्छा हो या खराब हो। लेकिन गाँव में तो सबसे पहले सुबह के समय कौए की ही आवाज़ चारों ओर गूँजती रहती है। तीन या चार साल की उम्र से ही हमारी और कौए की दोस्ती बनी है क्योंकि हमारे घरों में अक्सर कहा जाता है कि कौआ कैसे बोलता है, इसी के जवाब में हम कहते रहे "काँव-काँव"।

अपैक्स राज, आठवीं, किलकारी बिहार बाल-भवन, पटना, बिहार

मैं हवा बनना चाहूँगा क्योंकि फिर मैं बिना रुके सब जगह पहुँच जाऊँगा। पहाड़ों से लेकर समुद्र तक और किसी के घर की खिड़की से भी झाँक लूँ। किसी पर बोझ न बनूँ। बस हल्के से छूकर चली जाऊँ। किसी को ठण्डक दूँ तो किसी की पतंग उड़ाऊँ। सबकी सुनूँ पर किसी को जज न करूँ। सबकी बातें, हँसी, आँसू सब मेरे साथ बह जाए।

अजीत कुमार, सातवीं, पोखरामा फाउंडेशन अकादमी, पोखरामा, लखीसराय, बिहार

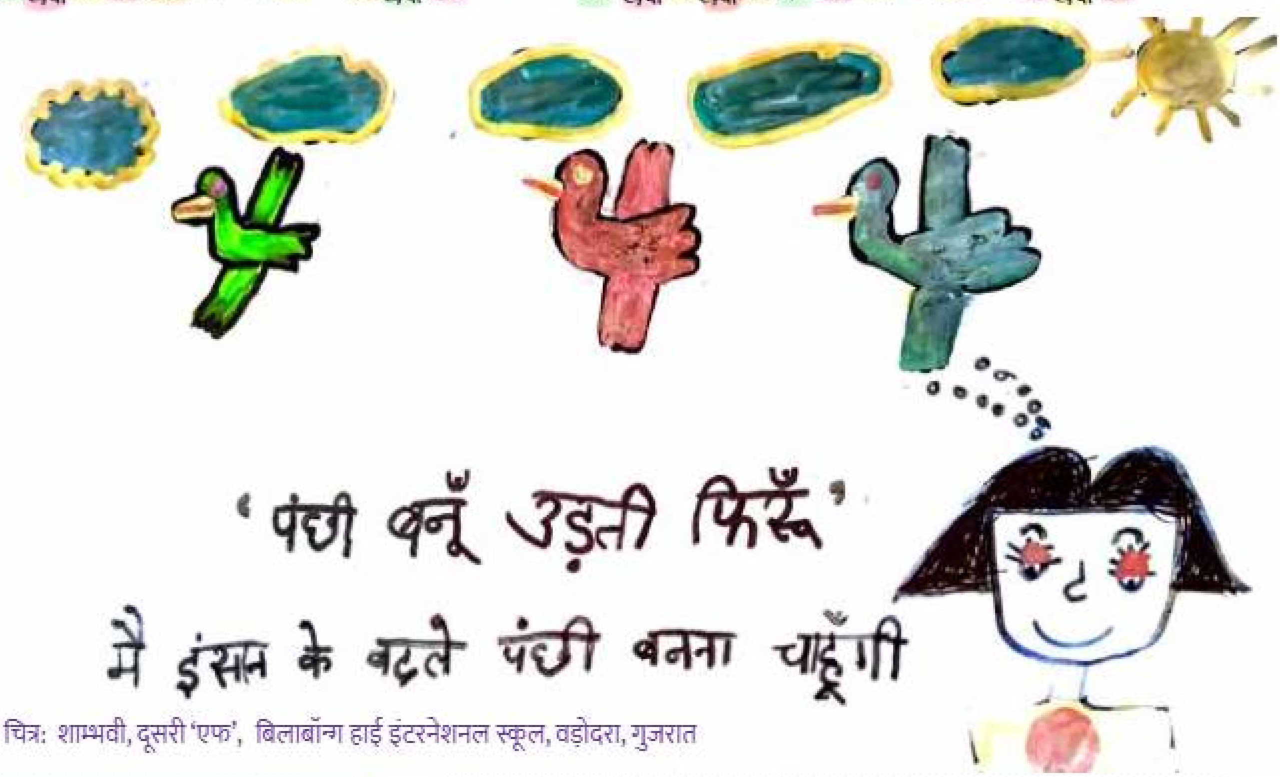

चित्र: शाम्भवी, दूसरी 'एफ', बिलाबॉन्ग हाई इंटरनेशनल स्कूल, वड़ोदरा, गुजरात

मैं आईना बनूँगा। आईना बनकर मैं लोगों के रूप के साथ-साथ उनकी हकीकत यानी उनकी गलतियाँ भी बताऊँगा। कई लोग कहीं जाने से पहले या किसी से कुछ कहने से पहले उसे आईने के सामने दोहराते हैं, मैं उन चीज़ों में उनकी गलतियाँ बताकर उन्हें सुधारने के लिए कहूँगा। इससे उनके कार्य में गलती नहीं होगा और उनका काम अच्छे से सम्पन्न होगा।

मोहम्मद शान, आठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला, लोधमा, कुनकुरी, छत्तीसगढ़

यदि मुझे इन्सान के अलावा कुछ और बनने का अवसर मिले तो मैं आसमान बनना चाहूँगी। मैं आसमान इसलिए बनना चाहूँगी क्योंकि मैं आसमान बनकर के वर्षा करूँगी। इससे खेत-खलिहान हमेशा हरे-भरे रहेंगे। जब धूप होगी तो मैं बादल को कहकर छाँव करवा दूँगी ताकि किसी को परेशानी ना हो।

सय्यदा ईशल महीन हुसैन, छठवीं, किलकारी बिहार बाल-भवन, पटना, बिहार

मैं एक अदृश्य प्राणी बनना चाहूँगी ताकि मैं यह जान सकूँ कि कोई मेरी बुराई तो नहीं कर रहा है। और फिर तब मैं मुफ्त में पूरी दुनिया घूम पाऊँगी। यह भी जान पाऊँगी कि कौन व्यक्ति मेरे प्रति अच्छे हैं और कौन नहीं। मुझे किसी का डर नहीं होगा और मैं सुरक्षित रहूँगी। जो लोग किसी की मदद लेना पसन्द नहीं करते मैं अदृश्य होकर उनकी मदद करूँगी।

स्नेहा, आठवीं, दिशा इंडिया कम्युनिटी स्कूल, ग्राम पाड़ा, हरियाणा

कविता डायरी

बतूता का जूता

सर्वेश्वरदयाल सक्सेना
चित्र: कनक शशि अनिल

इब्न बतूता पहन के जूता
निकल पड़े तूफान में
थोड़ी हवा नाक में घुस गई
घुस गई थोड़ी कान में

कभी नाक को कभी कान को
मलते इब्न बतूता
इसी बीच में निकल पड़ा
उनके पैरों का जूता

उड़ते-उड़ते जूता उनका
जा पहुँचा जापान में
इब्न बतूता खड़े रह गए
मोची की दुकान में

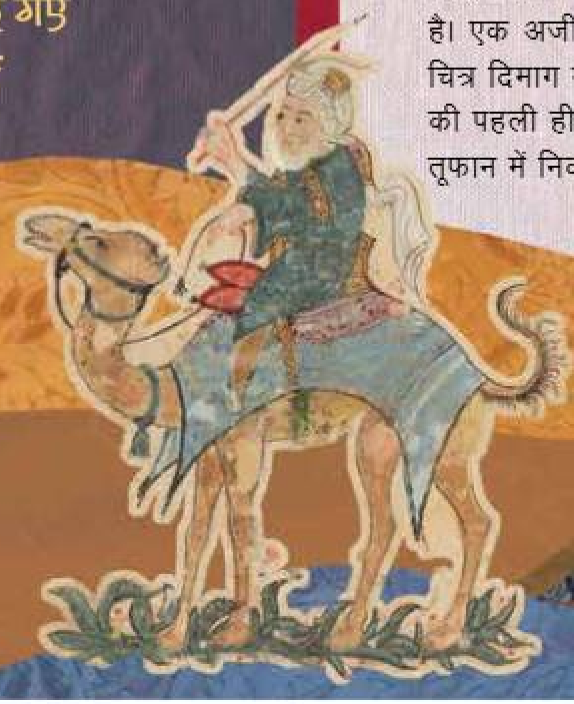

टिप्पणी

प्रभात

बरसों पुरानी कविता *इब्न बतूता* आज भी बच्चों और बड़ों के बीच समान रूप से प्रिय बनी हुई है। कुछ रचनाएँ होती हैं जो लोकप्रियता के मामले में अपने रचनाकार को बहुत पीछे छोड़ देती हैं।

इब्न बतूता कविता को पढ़ने में, गाने में कुछ ऐसा आनन्द छिपा है जो इसे पुरानी नहीं पड़ने देता। बल्कि ऐसा है कि कविता में रस लेने की क्षमता जैसे-जैसे बढ़ती जाती है इस कविता का आनन्द उतना ही बढ़ता जाता है।

इब्न बतूता नाम ही सबको अपनी ओर खींच लेता है। बच्चों के लिए हिन्दी की एक से एक सुन्दर कविताएँ रचने वाले गुलज़ार तक को इस नाम के जादू ने बाँध लिया। और उन्होंने 'इब्न बतूता बगल में जूता' जैसा एक नया गीत ही रच डाला।

इब्न बतूता नाम से ही जो छवि दिमाग में आती है, जो बिम्ब बनता है, वह किसी सामान्य आदमी का नहीं बनता है। एक अजीबोगरीब विराट नायक का चित्र दिमाग में बनता है। क्योंकि कविता की पहली ही पंक्ति में वे जूता पहनकर तूफान में निकल पड़े हैं। वे इतनी जल्दी

में हैं कि जूते भी ठीक से नहीं पहन पाए, केवल जूता ही पहनकर निकल पड़े हैं।

इधर इब्न बतूता जूता पैर में डालकर निकले नहीं कि तूफान और उनके बीच संघर्ष शुरू हो गया। “थोड़ी हवा नाक में घुस गई, घुस गई थोड़ी कान में।” इस हवा से जूझने में वे कभी अपनी नाक को मलते हैं, कभी कान को। नाक और कान को मलते रहने में इस कदर सुधबुध भूले हैं कि उनके तूफानी सफर का एकमात्र साथी जूता उनके पाँव से निकल जाता है। चूँकि यह तूफान के बीचों-बीच घटित हुआ है सो पाँव से निकलकर जूता उड़ रहा है। उड़ते रहता है, कहीं गिरने का तो सवाल ही नहीं। अन्त में जब तक वह गिरने काबिल स्थिति में आता है वह जापान पहुँच चुका होता है। मतलब यह कि इब्न बतूता लाख कोशिशें करके भी उसे पकड़ नहीं सकते थे। और क्या उन्होंने कोशिशें की नहीं होंगी?

इस संघर्ष के अन्त में, “इब्न बतूता खड़े रह गए मोची की दुकान में।” यह पंक्ति बताती है कि संघर्ष खत्म हो गया है। संघर्ष में जीत किसी की नहीं हुई है। हार भी किसी की नहीं हुई है। तूफान अपने रास्ते गया। तूफान से संघर्ष करने वाले इब्न बतूता मोची की दुकान में खड़े हैं। शायद नया जूता बनवाने के वास्ते। किसी नई उम्मीद से भरे। उम्मीद से भरे नहीं होते तो कहीं आराम फरमा रहे होते या कराह रहे होते। लेकिन उन्हें तो जैसे रुकना नहीं है, लौटना नहीं है, फिर निकल पड़ना है। कविता गोली की गति से शुरू होती है और कविता खत्म होने के बाद भी उसकी यह गति थमती नहीं है।

इस कविता की अमरता का रहस्य यही है। हिन्दी में ऐसा व्यापक दृश्य रचती हुई बच्चों की कविता दूसरी नहीं दिखाई देती। धरती और आकाश के बीच एक तूफान है जिसमें इब्न बतूता पैर में जूता डालकर निकल पड़े हैं। इस पूरे दृश्य में ज़मीन बस दो ही जगह दिखाई देती है, एक तब जब बतूता का जूता जापान में कहीं गिरता है और दूसरी बार तब जब इब्न बतूता मोची की दुकान में खड़े हैं।

इस कविता में खेल का उत्सव है। ज़बरदस्त ड्रामा है। फिल्म का आनन्द है। इतने सारे रस पाठक कुछेक शब्दों से प्राप्त कर पाता है, यही इस कविता में कला है, शिल्प की ऊँचाई है।

टिप्पणी

नरेश सक्सेना

संगीत और लय हमें दिल के धड़कने की लय के साथ जन्म से ही प्राप्त होते हैं। इसी लय से संगीत की सबसे सरल ताल कहरवा बनी है। बच्चों के खेलों के और लोरियों के सारे गीत मुख्यत: कहरवा ताल में ही बने।

कहरवा ताल यानी धक-धक-धक-धक की आवृत्ति गोया 1 2 3 4, 1 2 3 4! यानी धगिन तिनक धिन, धगिन तिनक धिन।

इब्न बतूता कविता भी कहरवा ताल में चलती है और अजीबोगरीब कल्पनाएँ और दृश्य रचने के साथ ही अपनी ध्वन्यात्मकता और लय से सिर्फ बच्चों को ही नहीं बड़ों को भी मोहित करती है।

ज़रा देखो–

कविता में "न" की ध्वनि कितनी बार आई है। छह पंक्तियों की इस कविता में पन्द्रह बार।

जा पहुँचा जापान में "जाप" और "जापा" ये जो ध्वनियों का दोहराव है वह एक खास तरह की गूँज पैदा करता है।

उड़ते-उड़ते जूता जापान पहुँचता है। वह चीन या तुर्की नहीं पहुँच सकता है। तूफान की तुक मिलाने के लिए पाकिस्तान में ज़रूर पहुँच सकता था। लेकिन पाकिस्तान के अन्त में "तान" आता है जबकि तूफान के साथ जापान लगने पर "पान" और "फान" की संगति है। यह इसलिए मज़ा देती है कि प और फ एक ही परिवार के सदस्य हैं। इस परिवार को हम प, फ, ब, भ, म के नाम से जानते हैं। इब्न बतूता के कान और नाक में तूफान की हवा का आधा-आधा भर जाने के अपने ही मज़े हैं। जैसा विचित्र इब्न बतूता का नाम है, वैसे ही विचित्र उसके नाक-कान होंगे!

बच्चों को गिरने, फिसलने या कुछ गड़बड़ हो जाने की कोई चिन्ता नहीं होती! वे हँसते हुए गिरते हैं, फिसलते हैं। और दूसरों के साथ ऐसी ही गड़बड़ हो जाए तब तो मज़ा और बढ़ जाता है।

इब्न बतूता कोई काल्पनिक नाम नहीं है। ये मोरक्को से पैदल ही दुनिया घूमने चल दिए थे। उस ज़माने में जब न रेलगाड़ियाँ थीं, न मोटरें चलती थीं। पहाड़ों, रेगिस्तानों और नदी-नालों को पार करते इब्न बतूता भारत भी आए थे।

अन्तर ढूँढो

इस चित्र में छह से ज़्यादा अन्तर हैं, तुमने कितने ढूँढे?

चित्र: लक्ष्मीकांत कीर, छठवीं, राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय, चौथ का बरवाडा, सवाई माधोपुर, राजस्थान

शिकाकु

जापानी में शिकाकु का मतलब चार कोनों वाली आकृति (यानी चतुर्भुज) होता है।

शिकाकु ज्यामिति पर आधारित तर्क-पहेली है। इसमें ग्रिड के कुछ खानों में संख्याएँ लिखी होती हैं। तुम्हें पूरी ग्रिड को आयतों और वर्गों में बाँटना होता है। लेकिन इसके कुछ नियम हैं:

- हर आयत में केवल एक ही संख्या होनी चाहिए।
- लिखी गई संख्या बताती है कि उस आयत में कुल कितने खाने होंगे।
- ग्रिड का कोई भी खाना खाली नहीं छूटना चाहिए।
- कोई भी दो आयत आपस में ओवरलैप नहीं करने चाहिए।

यहाँ तुम्हारे लिए दो शिकाकु पहेलियाँ दी गई हैं। इन्हें हल करके देखो। तुम चाहो तो हर आयत में अलग रंग भी भर सकते हो।

2	2			2
	2			2
	3			
3			4	
3			2	

4	2			3
			2	2
	2		3	
		3		2
2				

जवाब पेज 42 पर

पेज 11 से आगे

दुनिया का सबसे पुराना तैरता शहर

नींव की जाँच

लगभग दस साल पहले, पाडोवा यूनिवर्सिटी और वेनिस यूनिवर्सिटी की एक टीम ने शहर की नींव की हालत की जाँच की। इस टीम में सिल्विकल्चर, इंजीनियरिंग और कल्चरल हेरिटेज जैसे अलग-अलग विभागों के लोग शामिल थे। उन्होंने अपनी जाँच की शुरुआत फ्रारी चर्च के घण्टाघर से की। इसे 1440 में फाकुल लकड़ी की बल्लियों पर बनाया गया था। फ्रारी का घण्टाघर बनने के बाद से हर साल 1 मिलीमीटर नीचे धँस रहा है। अब तक यह कुल 60 सेंटीमीटर नीचे जा चुका है। प्रोफेसर मैकियोनी कहते हैं कि चर्चों और दूसरी इमारतों के मुकाबले घण्टाघरों का भार नींव के छोटे क्षेत्र पर पड़ता है। इसलिए ये ज़्यादा तेज़ी से और ज़्यादा गहराई तक धँसते हैं, ठीक वैसे ही जैसे पतली हील वाली कोई सैंडल ज़मीन में धँसती है।

शोधकर्ता कैटेरिना फ्रांसेस्का इज़्ज़ो ने कई चर्च, घण्टाघरों और नहरों के किनारों के नीचे से लकड़ी के नमूने इकट्ठे किए और उनका अध्ययन किया। उस समय कुछ नहरों को खाली करके उनकी सफाई की जा रही थी। वे बताती हैं कि सूखी नहर के तल पर काम करते समय उन्हें बहुत सावधान रहना पड़ता था, क्योंकि कभी-कभी किनारे के पाइप से अचानक गन्दा पानी निकलने लगता था।

टीम ने पाया कि जिन-जिन इमारतों की उन्होंने जाँच की, उन सभी में लकड़ी को नुकसान पहुँचा था। यह चिन्ता की बात थी। लेकिन अच्छी बात यह थी कि पानी, कीचड़ और लकड़ी से मिलकर भी नींव अब भी इमारतों को मज़बूती से थामे हुए थी।

इस जाँच ने एक आम धारणा को भी गलत साबित कर दिया। लोग मानते थे कि वेनिस की इमारतों के नीचे की लकड़ी इसलिए नहीं सड़ती क्योंकि वहाँ ऑक्सीजन नहीं होती। मगर यह पूरी तरह सही नहीं है। ऑक्सीजन न होने पर भी बैक्टीरिया लकड़ी को कुछ नुकसान पहुँचा सकते हैं। फर्क ये है कि बैक्टीरिया लकड़ी को बहुत धीरे-धीरे नुकसान पहुँचाते हैं, जबकि फफूँद और कीड़े-मकोड़े कहीं ज़्यादा तेज़ी से नुकसान पहुँचाते हैं। लेकिन ये

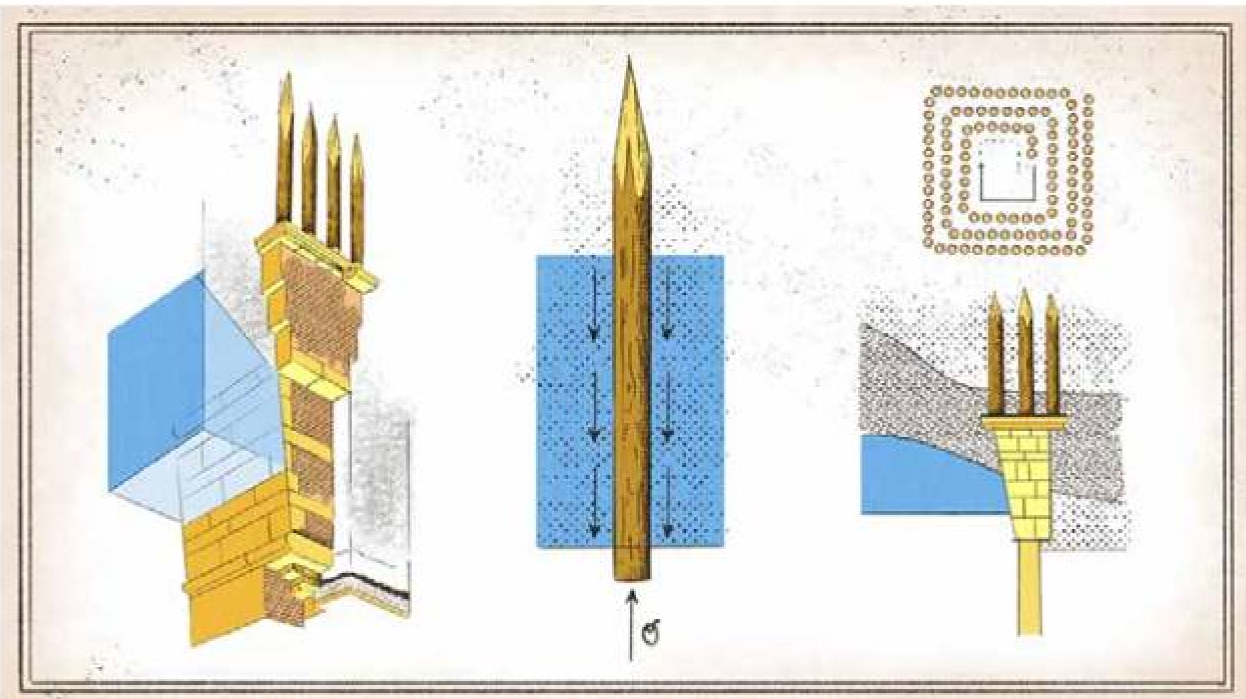

ऑक्सीजन की मौजूदगी में ही काम करते हैं। बैक्टीरिया लकड़ी की जिन कोशिकाओं को खाली कर देते हैं, उनमें पानी भर जाता है। इसी वजह से लकड़ी की बल्लियाँ अपना आकार बनाए रख पाती हैं। भले ही लकड़ी को कुछ नुकसान पहुँचे, फिर भी लकड़ी, पानी और कीचड़ का पूरा इन्तज़ाम एक-दूसरे से मज़बूती से जुड़ा रहता है। यह सब ज़बरदस्त दबाव के कारण होता है और इसी वजह से यह इन्तज़ाम सदियों तक मज़बूत बना रहता है।

प्रोफेसर इज़्ज़ो कहती हैं,"क्या चिन्ता की कोई बात है? हाँ भी, और नहीं भी। लेकिन हमें इस तरह की रिसर्च को जारी रखने के बारे में ज़रूर सोचना चाहिए।" दस साल पहले नमूने इकट्ठा करने के बाद उन्होंने दोबारा कोई नए नमूने नहीं लिए हैं। इसकी मुख्य वजह यह है कि इस काम में काफी ज़्यादा तैयारी और मेहनत की ज़रूरत पड़ती है।

मैकियोनी कहते हैं, "पता नहीं है कि ये नींवें और कितने सैकड़ों सालों तक टिकी रहेंगी। लेकिन जब तक यहाँ का वातावरण ऐसा ही बना रहेगा, तब तक इसके टिकने की उम्मीद है। मिट्टी ऑक्सीजन रहित वातावरण बनाए रखती है। पानी इस स्थिति को बनाए रखने के साथ ही कोशिकाओं के आकार को बनाए रखने में मदद करता है, और लकड़ी मिट्टी के साथ घर्षण करती है। इन तीनों में से किसी एक के भी न होने पर पूरा सिस्टम ढह जाता है।"

वर्तमान में लकड़ी के शहर

उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में नींव बनाने के काम में लकड़ी की जगह पूरी तरह से सीमेंट ने ले ली थी। लेकिन हाल के वर्षों में लकड़ी से इमारतें बनाने का चलन तेज़ी से बढ़ा है। अब तो लकड़ी से ऊँची-ऊँची इमारतें भी बनाई जा रही हैं। लेस्ली कहते हैं, "अभी यह एक बहुत ही 'कूल' (आकर्षक) सामग्री मानी जा रही है, और इसके पीछे बहुत ही ठोस कारण हैं।" लकड़ी अपने भीतर कार्बन को जमा रखती है। यह बायोडिग्रेडेबल (प्राकृतिक रूप से नष्ट होने वाली) है। लचीली होने के कारण यह भूकम्प का सामना भी अच्छी तरह कर सकती है।

मैकियोनी आगे कहते हैं, "बेशक, आज के ज़माने में हम पूरे के पूरे शहर लकड़ी से नहीं बना सकते, क्योंकि हमारी आबादी बहुत बढ़ चुकी है। लेकिन इस बात से इन्कार नहीं किया जा सकता कि कृत्रिम सामग्रियों और मोटरों के अभाव में प्राचीन कारीगरों और इंजीनियरों को कहीं ज़्यादा सूझ-बूझ से काम लेना पड़ता था।"

पुज़रिन कहते हैं कि वेनिस अकेला ऐसा शहर तो नहीं है जिसकी नींव लकड़ी से बनी है लेकिन यह एकमात्र ऐसा शहर है जहाँ घर्षण की इस तकनीक का बड़े पैमाने पर इस्तेमाल किया गया और जो आज भी कायम है। और बेहद खूबसूरत है। उन लोगों ने 'सॉइल मैकेनिक्स' (मिट्टी के गुणधर्मों का अध्ययन) या 'जियोटेक्निकल इंजीनियरिंग' की पढ़ाई नहीं की थी, फिर भी उन्होंने कुछ ऐसा रच दिखाया जिसकी कल्पना करना भी आज कठिन है। वे प्रकृति को समझने वाले कमाल के इंजीनियर थे, जिन्होंने आसपास की परिस्थितियों का पूरा-पूरा लाभ उठाते हुए एकदम सही काम किया।

इस लेख में दिए गए चित्र केवल कलात्मक उद्देश्यों के लिए हैं। वे वेनिस की इमारतों के नीचे मौजूद लकड़ी की बल्लियों की असली तस्वीर नहीं दिखाते। असल में ये बल्लियाँ बहुत पास-पास सटी होती हैं और उनमें कोई शाखाएँ नहीं होतीं।

यह लेख 26 मार्च 2025 को https://www.bbc.com पर प्रकाशित हुआ था।
इस कहानी को छापने की अनुमति के लिए लेखक और चित्रकार का आभार।

आखिर मुसीबत टल ही गई

अफरोज़ जहाँ
चित्र: पंकज साइकिया

दोराहा गाँव की एक कहानी सुनते हैं। यह गाँव सीहोर ज़िले में है। गाँव से दो किलोमीटर की दूरी पर दोराहा जोड़ है। यह थोड़ी ऊँचाई पर बसा है। यहाँ की ज़्यादातर बस्तियाँ एक नदी के पास बसी हुई हैं। वहाँ बड़ा-सा डैम भी है जो दोराहा से निकलने वाली नदी से जुड़ा हुआ है। इस नदी पर एक पुल बना हुआ है जिसके दोनों तरफ लोग रहते हैं। कुछेक लोगों के घर पुल के नीचे नदी किनारे खाली पड़ी ज़मीन पर भी बने हुए हैं। नदी में भरपूर पानी रहता है। लोगों की रोज़मर्रा की ज़रूरतों के लिए पानी यहीं से मिलता है।

यहाँ ज़्यादातर लोग मज़दूरी करके अपना जीवन चलाते हैं। उनमें एक-दूसरे के लिए अपनापन और फिक्र साफ दिखाई देती है। चाहे त्योहार हों या मुश्किल हालात, वे हमेशा एक-दूसरे के साथ खड़े रहते हैं।

ये तो हुई गाँव और उसके लोगों की बात। अब बात करते हैं इसी गाँव की एक बस्ती की। नाम है 'जमाई मोहल्ला'। तुम सोच रहे होगे भला यह नाम क्यों रखा गया? असल में इस बस्ती की ज़्यादातर बेटियाँ अपने पति के साथ यहाँ आकर बस गई हैं। इसके पीछे की ठोस वजह तो हमें नहीं पता। इतना ज़रूर सुना है कि काम की तलाश में लोग यहाँ आकर बसते गए।

बरसात का मौसम था। आठ दिनों से गाँव में लगातार बारिश हो रही थी। लोगों के काम-धन्धे ठप्प पड़ गए थे। घरों से निकलना भी दूभर हो गया था। पर बारिश थी कि कम होने का नाम ही नहीं ले रही थी। लगातार बारिश होने से डैम में पानी का स्तर बढ़ने लगा। इससे उसकी दीवार में भी दरार आ गई थी। यह खबर गाँव में जंगल की आग की तरह फैल गई।

कुछ ही वक्त में बाढ़ के आसार बनने लगे। हालात देखते हुए प्रशासन सतर्क हो गया। तुरन्त गाँव खाली करने का आदेश दिया गया। सभी को दोहरा जोड़ तक पहुँचना था क्योंकि वही एकमात्र स्थान था जो ऊँचाई पर था। इस खबर के बाद पूरे गाँव में अफरातफरी मच गई। जल्दी-जल्दी में जिसके हाथ घर का जो सामान लगा, वह उसे लेकर आगे बढ़ने लगा। गाँव में एक अन्ना मामू रहते थे। उनका एक ही तकिया कलाम था 'दढ़ से'। कोई भी बात करते तो उसमें यह शब्द जोड़ देते। उस समय वह मंजन कर रहे थे। जैसे ही उनके कानों में खबर पड़ी कि डैम फूटने वाला है, दातुन दूर फेंककर वह ज़ोर से चिल्लाए, "दढ़ से भागो।" मुँह पर मंजन लगाए वह भागे जा रहे थे। किसी ने टोका तो बोले, "जान बचाओ, जान। मुँह गन्दा होने से क्या होता है।"

इस बीच सड़कों और घरों में पानी भरने लगा था। लोग किसी तरह बचते-बचाते जोड़ की तरफ जाने लगे। एक नया शादीशुदा जोड़ा भी इस भीड़ में शामिल था। बेगम ने जैसे ही पैर घर से बाहर रखा वह ज़ोर से चिल्लाईं, "अरे! हमारे पैर खराब हो गए।" शौहर ने गुस्से में तमतमाते हुए कहा, "ये पैर-वैर छोड़ो। जान बचानी है तो पैर गन्दे करते हुए ही चलो।" बानो आपा अपने पन्द्रह दिन के बेटे को कपड़े में लपेटे गोदी में कसकर पकड़े हुए रास्ता पार कर रही थीं। अचानक उन्हें लगा कि

भीड़ के धक्के से बच्चा कहीं गिर तो नहीं गया। पर जब उन्होंने कपड़े में बच्चे को दुबके हुए सोते देखा तो उनकी जान में जान आई।

सभी लोग परिवार व ज़रूरी सामान के साथ आगे बढ़ते जा रहे थे। जगन भैया सिर पर टीवी रखे चल रहे थे। शरारती बंटी बोला, "चाचा तुम अपनी चिन्ता करो। ऐसे समय में भी तुम्हें टीवी की पड़ी है।" अन्ना चाचा बोले, "दढ़ से भाई, ऐसे वक्त में भी तुम्हें खुद की जान से ज़्यादा टीवी की फिक्र हो रही है।" जगन चाचा बोले, "अभी बीस दिन ही तो हुए हैं टीवी लाए। अब डूबने के लिए कैसे छोड़ दूँ? तुम्हारी चाची भी नहीं रहीं। ये टीवी ही मेरा एकमात्र सहारा है।" इतना कहना था कि उनका पैर एक पत्थर से टकराया और टीवी नीचे गिर पड़ा। पानी में गिरने से टीवी खराब तो हो ही गया था। अब कुछ नहीं हो सकता था। मायूस चेहरे के साथ चाचा आगे बढ़ गए। बोले, "तुम सबकी टोक लगने से ऐसा हुआ है।"

जगन चाचा को दुखी देखकर बंटी को बुरा लगा। वह उनके साथ चलने लगा। आगे सड़क किनारे दो मंज़िला पक्का मकान बना हुआ था। इस घर में रहने वाली बुज़ुर्ग अम्मा का परिवार तो भरा-पूरा था ही। पैसे की भी उनके

पास कोई कमी न थी। उनका परिवार इस मोहल्ले का सबसे रईस परिवार था। देखने में अम्मा भले ही छोटे कद की थीं, पर आवाज़ कड़क थी। पान-सुपारी की थैली हमेशा कमर में लटकाकर रखतीं। सभी उन्हें बड़ी अम्मा कहकर बुलाते थे।

बड़ी अम्मा के परिवार के लोग भी इस मुश्किल वक्त में ज़रूरी सामान साथ लेते हुए घर से निकल रहे थे। पर बड़ी अम्मा जाने क्या ढूँढने में लगी हुई थीं। बेटा बोला, "अम्मा, जल्दी चलो।" अम्मा बोलीं, "तुम लोग जाओ मैं तो यही रहूँगी और घर की रखवाली करूँगी।" "नहीं-नहीं, अम्मा आप तो चलिए। जान है तो जहान है।" पर बड़ी अम्मा थीं कि मान ही नहीं रही थीं। बेटा बोला, "अगर आप नहीं चलोगी तो हम भी नहीं जाएँगे।" अम्मा ने कहा, "मेरी फिक्र मत करो, मरना तो है ही। अगर घर की रखवाली करते हुए मरूँगी तो चैन से मर सकूँगी। तुम्हें मेरी कसम है, जाओ।" कसम से बँधे हुए सभी बड़ी अम्मा को वहीं छोड़ आगे चल दिए। आगे बढ़ते हुए उनका परिवार बार-बार उन्हें देख रहा था। उधर बड़ी अम्मा उन्हें दुआएँ देते हुए विदा कर रही थीं।

पूरे गाँव में बड़ी अम्मा के अलावा कोई नहीं था। दरअसल बड़ी अम्मा एक रस्सी ढूँढ रही थीं। सभी के जाते ही बड़ी अम्मा ने अपना रुपया-पैसा, सोना-चाँदी और सारी जमा पूँजी को एक मज़बूत लोहे की पेटी में रखा और एक बड़ा-सा ताला लगा दिया। अब रस्सी और पेटी लेकर छत के ऊपर बनी खिड़की के पास पहुँच गईं। उन्होंने रस्सी के एक सिरे को खिड़की से बाँधा और दूसरे सिरे से खुद को बाँध लिया। एक और रस्सी से इसी तरह पेटी को बाँध लिया। पूरी रात उन्होंने खैर की दुआ करते हुए यूँही गुज़ार दी। दूसरी ओर, उनका परिवार रात भर उनकी फिक्र करता रहा। आसपास के लोगों से गाँव की खबर लेता रहा। गाँव में जिसको भी बड़ी अम्मा के बारे में पता लगा, उसने यही कहा कि बड़ी अम्मा तो हैं ही लालची। उनका तो उसूल ही है, चमड़ी जाए पर दमड़ी न जाए।

बाकी सभी लोग एक साथ सुरक्षित स्थान पर थे। सरकार द्वारा उनको खाना मुहैया कराया गया। आखिरकार रात गुज़र गई। अब तक बारिश रुक गई थी। शुक्र की बात है कि डैम की दीवार भी नहीं टूटी थी। सुबह का सूरज सभी के चेहरों पर मुस्कान ले आया। खतरा टला तो सभी गाँव की ओर चल दिए।

परिवार के साथ ही बाकी सब भी बड़ी अम्मा से मिलने को बेचैन थे। बस्ती भले छोटी थी पर यहाँ बसने वाले लोगों के दिल बड़े थे। बड़ी अम्मा घर की दहलीज़ पर बैठी पान खा रही थीं। उन्हें ठीक देखकर सभी ने चैन की साँस ली। जाते वक्त मायूस दिख रहे चेहरे अब खिले हुए थे। अपनी जगह पर लौटने की खुशी सबकी आँखों में झलक रही थी। "मैंने कहा था न कुछ नहीं होगा। तुम सब ख्वाहमख्वाह ही परेशान हुए।" मुस्कराते हुए बड़ी अम्मा बोलीं।

मशरूम के नीचे

वी सुतेयेव की एक कहानी

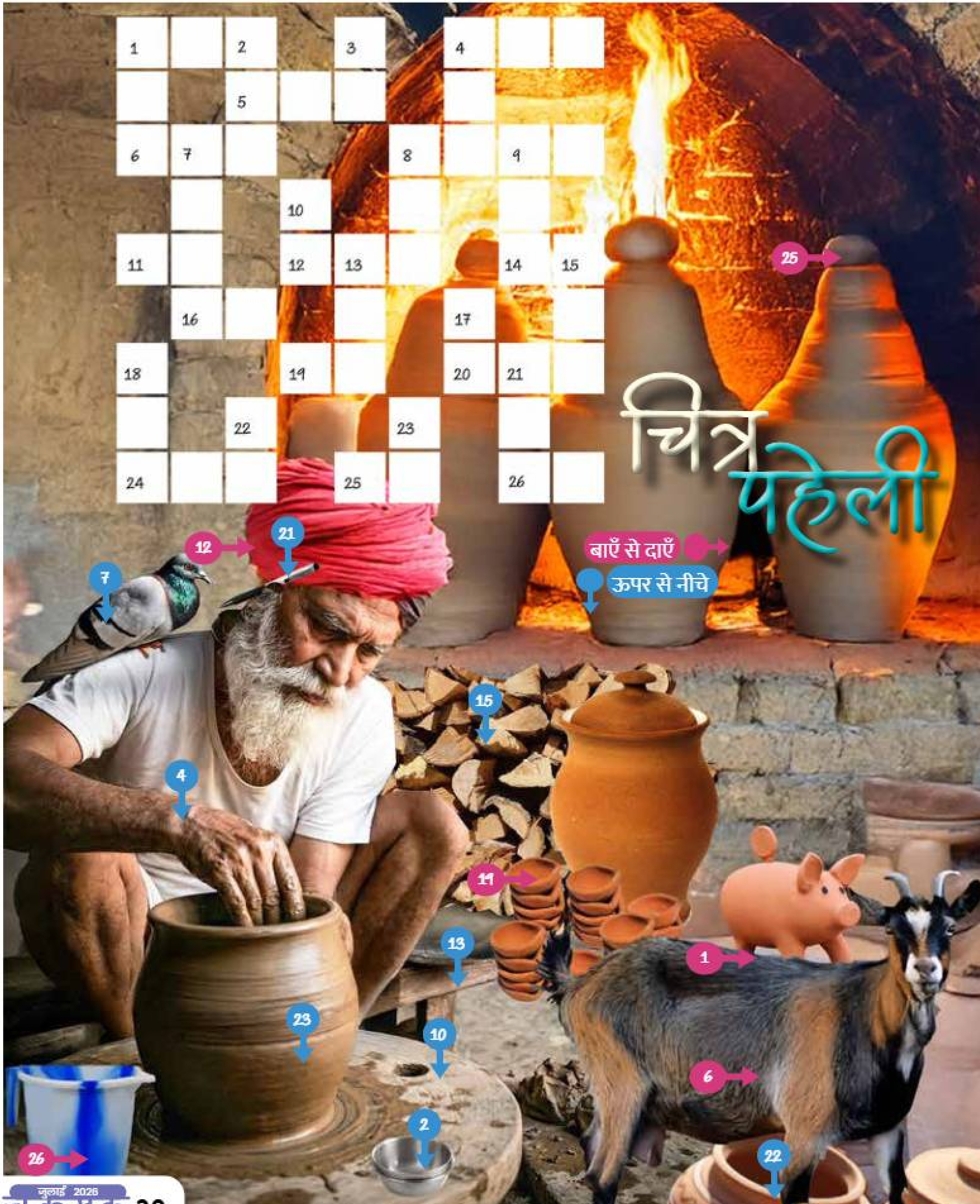
चित्र पहेली
बाएँ से दाएँ
ऊपर से नीचे

सुडोकू 98

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ डब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।

9	2	4			3			6
		3		6		9		1
7	1	6	5					8
			7	9	5	6	3	4
	7	9				5		
6		5	3	2			9	7
	9		6		1	8	7	
1				7	4		6	
5		7	8	3	2	4		9

जवाब पेज 42 पर

भाग - 23

अन्य देश से आए और हमारे देश में सफलता से बसे हुए आक्रामक पौधों की सीरिज की अगली कड़ी...

मेहमान जो कभी गए ही नहीं

आर एस रेश्नू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा, अनीता वर्गीस और अंकिला जे हिरेमथ
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

रात की रानी (Orange Cestrum)

वैज्ञानिक नाम:
सैस्ट्रम् औरैन्टिऐकम्
(Cestrum aurantiacum)

मूल: मध्य अमेरिका

कैसे पहुँचा:
भारत में इसे बतौर सजावटी पौधे और बाड़ बनाने के लिए लाया गया। श्रीलंका में यह उन्नीसवीं सदी के अन्त में लाया गया। सम्भव है कि भारत में भी यह लगभग इसी समय पहुँचा होगा।

रात की रानी एक बड़ी झाड़ी है जो सीधी बढ़ती है। इसकी शाखाएँ घनी और बिखरी हुई होती हैं। कभी-कभी रात की रानी दूसरे पौधों पर चढ़ जाती है और काफी बड़े इलाके में फैल जाती है। आम तौर पर इसकी ऊँचाई 3 मीटर तक होती है, लेकिन यह 6 मीटर से भी ज़्यादा ऊँचाई तक बढ़ सकती है। इसकी छाल पर लम्बाई में धारियाँ होती हैं।

इसकी पत्तियाँ गहरे हरे रंग की होती हैं और उन पर पीली नसें होती हैं। पत्तियाँ अण्डाकार या सँकरी अण्डाकार होती हैं और उनके सिरे नुकीले होते हैं। फूल पीले से नारंगी रंग के होते हैं और गुच्छों में लगते हैं। इनसे अच्छी खुशबू आती है। इसके फल बेर जैसे होते हैं यानी बिना गुठली के होते हैं। फल सफेद या हल्के क्रीम रंग के होते हैं। पत्तियों को मसलने पर उनसे तेज़ बदबू आती है।

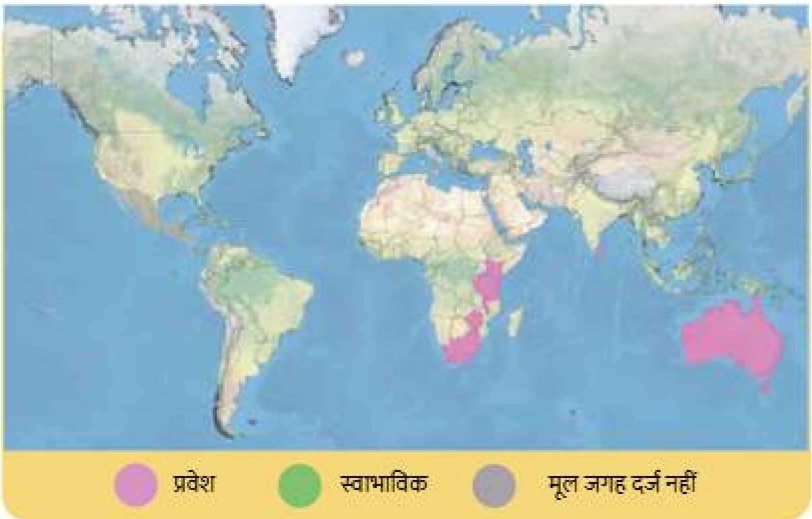

*हालाँकि CABI (2023) से प्राप्त इस नक्शे में दिखाया नहीं गया है, लेकिन प्रायद्वीपीय भारत में इसे आक्रामक एलियन पौधे के तौर पर जाना जाता है।

असर

यह सड़कों के किनारे खुली जगहों और जंगलों व बागानों के किनारों पर उगता है। यह तेज़ी से फैलता है और घने झुण्ड बना लेता है। इससे स्थानीय पौधों की विविधता कम हो जाती है क्योंकि यह संसाधनों की होड़ में उनसे आगे निकल जाता है। अगर इन्हें तनों से तोड़ भी दिया जाए, तो उथली जड़ों से नए पौधे उग सकते हैं। यह पौधा मवेशियों और इन्सानों के लिए बहुत ज़हरीला होता है।

बन्दोबस्त

सबसे अच्छा तरीका तो यह है कि पौधे में फूल या फल आने से पहले ही उसे हटा दिया जाए। पूरे पौधे को जड़ों समेत उखाड़ना इसे नियंत्रित करने का सबसे प्रभावी तरीका है। उखाड़ने के बाद जड़ों को जला देना चाहिए। मिट्टी में रह गए जड़ों के छोटे-छोटे टुकड़ों से भी नए पौधे उग सकते हैं। इसलिए समय-समय पर इसे हटाने का काम करते रहना चाहिए। मशीन या हाथ से पौधे को हटाने के बाद वहाँ चरागाहों में उगने वाले स्थानीय पौधे लगाने की सलाह दी जाती है ताकि स्थानीय पौधे रात की रानी के नए पौधों को संसाधनों की होड़ में पीछे छोड़ सकें।

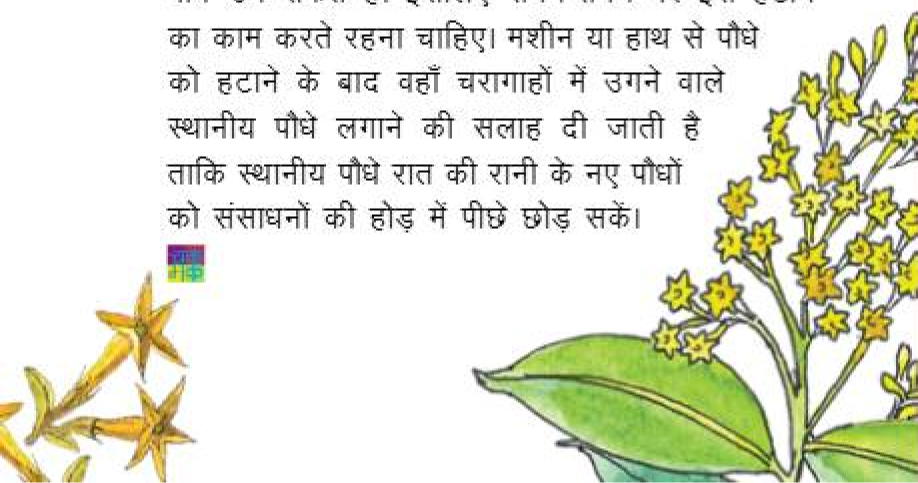

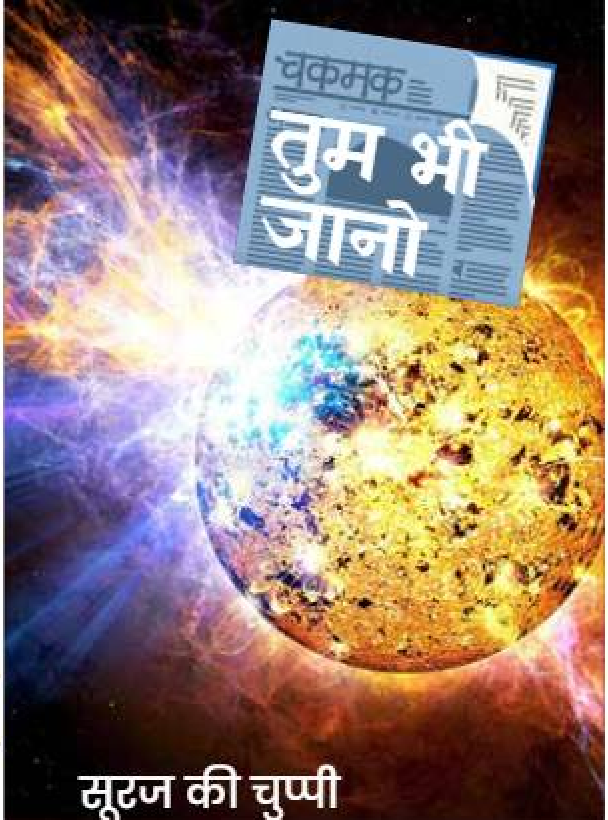

सूरज की चुप्पी

सूरज बहुत गर्म, विद्युत आवेशित गैस का एक विशाल चमकता हुआ गोला है। इस गैस को प्लाज़्मा कहा जाता है और इसमें भयंकर हलचल होती है। ऐसे में हमें सूरज की आवाज़ें क्यों नहीं सुनाई देतीं, जबकि उसकी रोशनी दिखाई देती है? बात दरअसल यह है कि अन्तरिक्ष में बहुत ही कम कण हैं। रोशनी को कहीं भी पहुँचने के लिए कणों की ज़रूरत नहीं होती। यानी वह निर्वात (वैक्यूम) से भी गुज़र सकती है। लेकिन आवाज़ों के साथ ऐसा नहीं है। जब कोई चीज़ हिलती है, तो वह आसपास की हवा, पानी या ठोस पदार्थों के कणों को भी हिला देती है। इससे कणों के दबाव में बदलाव होता है, जिससे तरंगें बनती हैं। ये तरंगें बाहर की ओर तब तक चलती हैं जब तक वे तुम्हारे कान तक नहीं पहुँच जातीं। लेकिन अन्तरिक्ष में कणों के ना के होने के कारण ऐसा नहीं हो पाता है।

मच्छरदानी क्रान्ति : अफ्रीका से दुनिया भर में

पीयूष सेकसरिया
अनुवाद: विनता विश्वनाथन

मैं बीबीसी मराठी पर पद्मश्री डॉ हिम्मतराव बावस्कर का एक इंटरव्यू देख रहा था। वे कोंकण के ग्रामीण इलाकों में बिच्छुओं के जानलेवा डंक के इलाज से जुड़ी रिसर्च के लिए जाने जाते हैं। अपने काम के शुरुआती दिनों में उन्हें एक दिलचस्प बात पता चली। उस इलाके के एक समुदाय के लोगों को अक्सर बिच्छू काट लेते थे, जबकि दूसरे समुदाय के लोगों के साथ ऐसा नहीं होता था। इसका कारण जानने के लिए वे गाँवों में गए। यह देखकर वे हैरान रह गए कि मच्छरदानी लगाकर सोने की वजह से उस समुदाय के लोगों को जानलेवा बिच्छुओं से काफी हद तक सुरक्षा मिल रही थी। उन्होंने यह भी देखा कि उस समुदाय में अत्यन्त ज़हरीले साँप 'कॉमन क्रेट' के काटने की घटनाएँ भी बहुत कम थीं। यानी एक साधारण सी मच्छरदानी लोगों को मच्छरों के अलावा और भी कई खतरों से बचा रही थी।

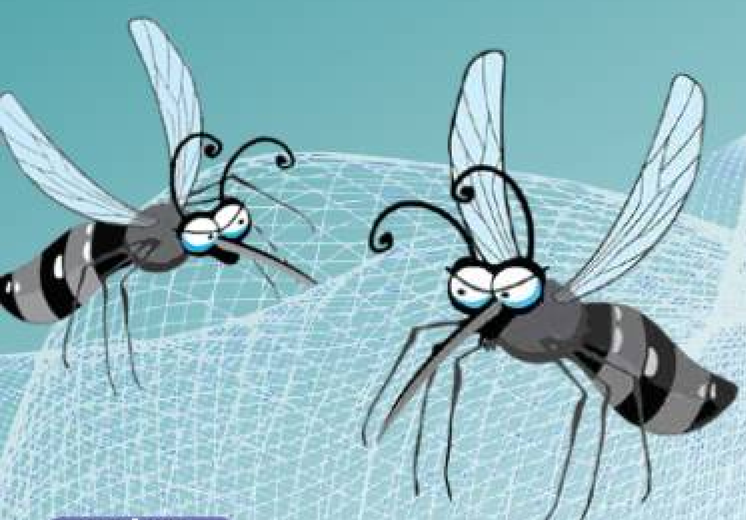

लेकिन मच्छरदानी की कहानी हमेशा ऐसी नहीं थी। बहुत पुराने समय में मच्छरदानी का इस्तेमाल सिर्फ शाही लोग किया करते थे। मिस्र और रोम जैसी प्राचीन सभ्यताओं में मच्छरदानी के इस्तेमाल की बात सामने आती है। भारत में मच्छरदानी का ज़िक्र पन्द्रहवीं सदी के तेलुगु कवि अण्णामय्या की कविताओं में मिलता है, हालाँकि इनका इस्तेमाल पक्के तौर पर उससे भी पहले से हो रहा होगा। अँग्रेज़ों ने भी मच्छरदानी का इस्तेमाल करना शायद भारत में अपने शासन की शुरुआत के दौरान ही सीखा।

समय के साथ बुनाई और कपड़ा बनाने की तकनीक में सुधार हुआ। मच्छरदानियों का जाल पहले से ज़्यादा बारीक और हवादार हुआ। इससे मच्छरदानियाँ और भी ज़्यादा आरामदायक बनने लगीं। जैसे-जैसे कीड़ों से फैलने वाली बीमारियों के बारे में जागरूकता बढ़ी, मच्छरदानियाँ घर की ज़रूरी चीज़ बन गईं।

लेकिन मच्छरदानी की असली क्रान्ति 1983 में पश्चिमी अफ्रीका के बुर्किना फासो के बोबो-डिउलासो शहर में शुरू हुई। उस समय मलेरिया के खिलाफ ज़ोर-शोर से लड़ाई चल रही थी। फ्रांस और अफ्रीका के कीट-पतंगों विशेषज्ञों की एक टीम ने मच्छरदानियों को पानी और पाइरेथ्रॉइड नाम के एक कीटनाशक के घोल में डुबोया। उन्होंने पाया कि ऐसी मच्छरदानियाँ न केवल सोते हुए लोगों को मच्छरों से बचाती है, बल्कि इससे मलेरिया फैलने की दर में भी भारी कमी आई। शुरुआत में कई वैज्ञानिकों को इस नतीजे पर विश्वास नहीं हुआ। उन्हें उम्मीद

थी कि मलेरिया की वैक्सीन जल्द ही बन जाएगी। इसलिए उन्होंने कीटनाशक लगी इन मच्छरदानियों को उतनी गम्भीरता से नहीं लिया।

लेकिन बाद में हुए प्रयोगों और बड़े पैमाने पर हुए अध्ययनों ने यह साबित कर दिया कि कीटनाशक लगी मच्छरदानियाँ सचमुच बहुत प्रभावी हैं। इन नतीजों से उत्साहित होकर 1990 के दशक में कम्पनियों ने लॉन्ग-लास्टिंग इंसेक्टिसाइडल नेट्स' (LLINs) बनाना शुरू किया। यानी ऐसी कीटनाशक जालियाँ जो लम्बे समय तक असरदार रहें। इन मच्छरदानियों को बनाते समय जाली के रेशे में ही कीटनाशक मिला दिया जाता था। इससे वे कई सालों तक असरदार बनी रहतीं और उन्हें बार-बार कीटनाशक में भिगोने की ज़रूरत भी नहीं पड़ती। इन मच्छरदानियों में इस्तेमाल किए जाने वाले कीटनाशक (डेल्टामेथ्रिन या पर्मेथ्रिन) आम तौर पर इन्सानों के लिए सुरक्षित होते हैं। लेकिन मच्छरों के लिए ये ज़हरीले होते हैं।

आज ऐसी मच्छरदानियाँ दुनिया भर के मलेरिया प्रभावित देशों में बड़े पैमाने पर इस्तेमाल की जा रही हैं। इनके अलावा साधारण मच्छरदानियाँ भी खूब उपयोग की जाती हैं, खासकर उन इलाकों में भी जहाँ मच्छर तो बहुत हैं लेकिन मलेरिया का खतरा कम है।

भारत में मच्छरदानियों का चलन आज भी बना हुआ है। लेकिन डेंगू और चिकनगुनिया के बढ़ते मामलों के कारण अब इनकी जगह मच्छर भगाने वाली कॉइल, वेपोराइज़र, क्रीम और अगरबत्ती जैसे उपायों ने ले ली है। इनमें से कई उत्पादों में पायरेथ्रॉइड नामक रसायन होता है। इसे डीडीटी की तुलना में अधिक सुरक्षित माना जाता है। लेकिन अच्छी हवादार जगहों पर इन्हें इस्तेमाल करने की सलाह का अक्सर पालन नहीं किया जाता। हाल के वर्षों में सरकार ने मच्छर भगाने वाली कुछ अगरबत्तियों की बिक्री पर रोक लगाई, क्योंकि उनमें ऐसे पदार्थ पाए गए थे जिनके इस्तेमाल की अनुमति नहीं थी। दूसरी ओर, कभी बड़े पैमाने पर इस्तेमाल होने वाले डीडीटी पर अमेरिका में 1972 से ही रोक लगी हुई है। इन सब बातों के कारण लोगों के मन में मच्छर भगाने वाले उत्पादों की सुरक्षा को लेकर सवाल उठने लगे हैं।

ऐसे में कई बार नए रूप में लौट चुकी साधारण-सी मच्छरदानी फिर से लोकप्रिय होती दिखाई दे रही है। यह न केवल मच्छरों से बचाती है, बल्कि बिच्छुओं और साँपों को भी कुछ हद तक दूर रखती है।

माथापच्ची

फटाफट बताओ

ऐसी क्या चीज़ है जिसे हम नापते हैं, पर देख नहीं सकते?

([illegible])

क्या चीज़ है जो जलाने पर बढ़ती है?

([illegible])

अगर कल रविवार था तो परसों कौन-सा दिन होगा?

([illegible])

सात रंगों की एक रज़ाई
बारिश ओढ़कर साथ में लाई

([illegible])

ऐसा कौन-सा सवाल है जिसका जवाब हमेशा 'हाँ' होता है?

([illegible])

हमने एक अजूबा देखा
लाल तवे को चलता देखा
दिन भर फेरा करता रहता
पूरब से पश्चिम को चलता

([illegible])

1. प्रिशा के पास 4 हरी, 4 लाल और 4 नीली गेंदें हैं। वह इन्हें एक ही पंक्ति में इस तरह रखना चाहती है कि

- एक ही रंग की दो गेंदें एक साथ न हों।
- सबसे पहली और आखिरी गेंद अलग-अलग रंग की हो।

क्या तुम ऐसा करने में उसकी मदद कर सकते हो?

2. इस चित्र में तुम्हें कितने चौकोर दिखाई दे रहे हैं?

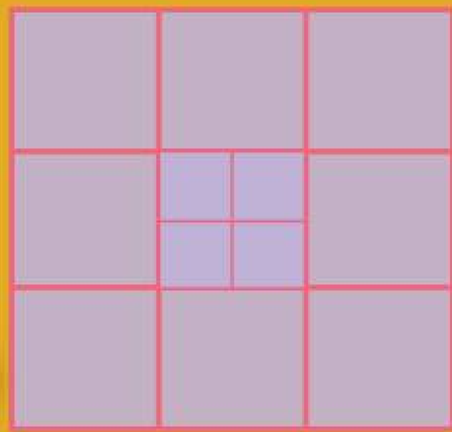

3. 7 रोटियों को 12 लोगों में बराबर-बराबर बाँटना है। तुम किसी भी रोटी के 12 टुकड़े नहीं कर सकते। ऐसे में रोटियों को किस तरह बाँटोगे?

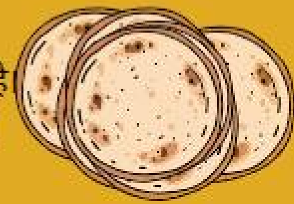

4. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग गणितीय चिह्न आने चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-सी चिह्न आएँगे?

+			=
		+	×
×			
÷	=	×	+

5. कौन-सा चित्र बाकियों से अलग है?

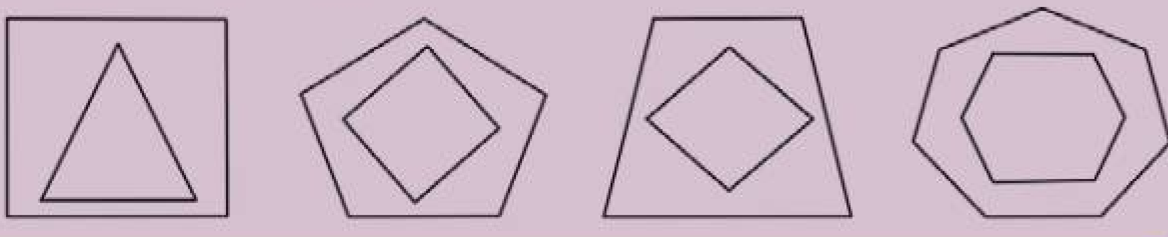

6. खाली खानों में 1 से 6 तक की संख्याएँ भरना है ताकि उत्तर 50 मिले। पर ध्यान रखना कि

- गणितीय चिह्नों को उसी क्रम में इस्तेमाल करना है जिस क्रम में यहाँ दिए गए हैं।
- क्रम से आनेवाली संख्याएँ एक साथ नहीं आएँगी।
- 1 से भाग नहीं देना है।

7. दिए गए वाक्यों में कुछ फलों के नाम छिपे हुए हैं। ज़रा ढूँढो तो।

- मीना रंगीन चॉक लेकर आई थी।
- प्राची कूलर में पानी भर रही है।
- पानी कल से बरस रहा है।
- जूली चीनी लेने गई है।
- पूजा मुनगे की सब्ज़ी बहुत अच्छी बनाती है।
- सफर में सामान कम रखना चाहिए।
- मेरा छोटा भाई बेलन को खिलौना समझकर उठा लाया।

	+		–		×		÷		×		=	50

8. दो बच्चे शतरंज खेल रहे थे। दोनों ने कुल 5 मैच खेले और दोनों ने ही 3-3 मैच जीते। ऐसा कैसे हो सकता है?

9. हरविंदर जसमीत के पिता हैं। पर जसमीत उनका बेटा नहीं है। यह कैसे हो सकता है?

10. दी गई ग्रिड में मानव शरीर के कई सारे अंगों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

को	ठु	जी	हृ	द	य	का	दो	खो
ह	ड्डी	मा	भ	ग	मा	द	न	प
नी	आँ	ख	पे	घु	हों	थे	ए	ड़ी
पै	म	हा	थ	ट	प	स	ली	पै
क	स्ति	पी	ग	ना	ल	द	व	त
ला	ष्क	उँ	ठ	सा	क	म	ट	पा
ई	टो	ग	आँ	दाँ	न	क	ला	फे
ट	ख	ला	ग	ट	द	न	मा	फ
ह	थे	ली	पु	त	को	ज	ब	ड़ा

जवाब पेज 42 पर

मेरा पन्ना

मेरी क्या गलती है?

दीपक बोहरा
चौथी, विद्या विकास स्कूल
बेंगलुरू, कर्नाटक

मैं मम्मी के साथ काम पर गया था। मम्मी झाड़ू कर रही थीं तो मैं फ्लैट वाली आंटी की बेटी के साथ पार्क में खेलने चला गया। वहाँ छह बच्चे और भी थे। मेरे कपड़े देखकर तीन लड़के मुझे अपने साथ खेलने नहीं देना चाहते थे। वे बाकी तीन लड़कियों को भी मेरे साथ खेलने से मना कर रहे थे। उन्होंने मुझसे मेरा घर भी पूछा। उन्होंने पूछा कि क्या मैं उसी सोसायटी में रहता हूँ। मुझे बहुत बुरा लगा। वे दिखाना चाह रहे थे कि मैं गरीब हूँ। मुझे रोना आ गया।

उनके पेरेंट्स के पास पैसे हैं तो इसमें मेरी क्या गलती है?

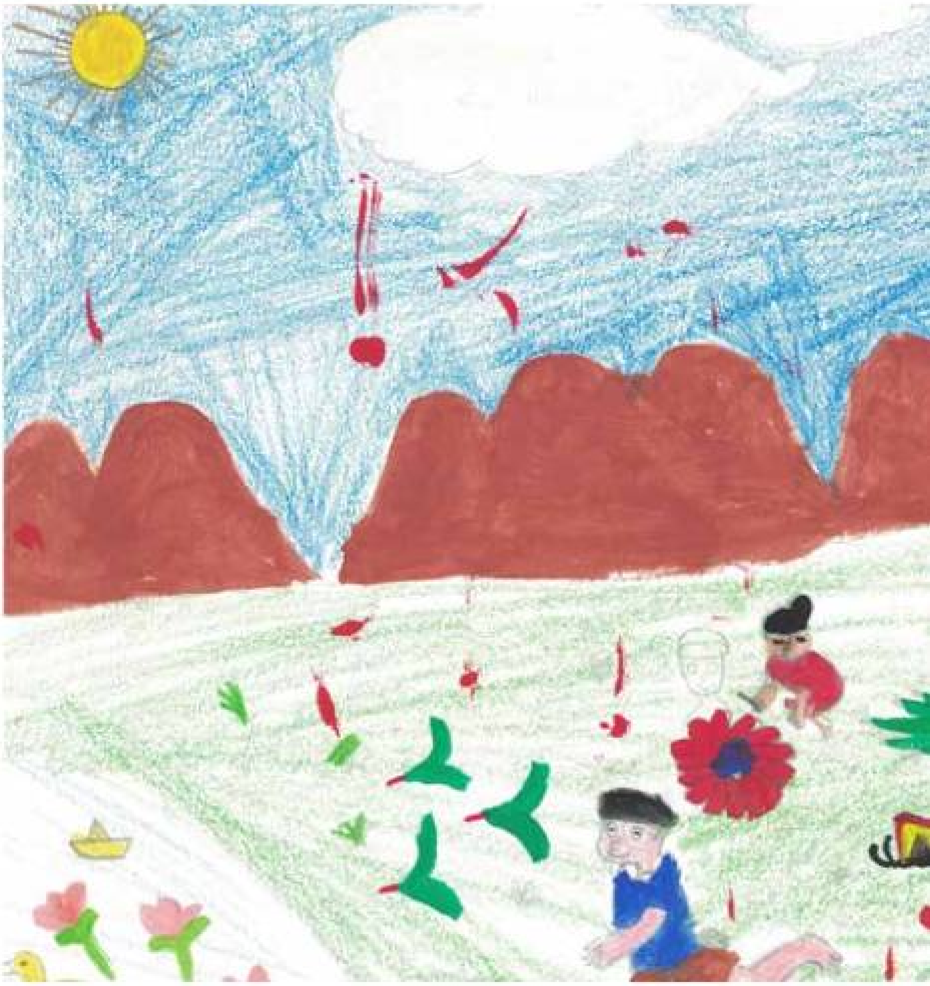

हॉकी स्टिक

अनुभव कुमार
छठवीं, विज़डम वर्ल्ड स्कूल, कुरुक्षेत्र, हरियाणा

हमारी हिन्दी की किताब में 'गोल' नाम से एक संस्मरण है। हमारी टीचर जी ने परिचय पृष्ठ में एक हॉकी स्टिक और बॉल बनाने को कहा था। अनमोल के परिचय पृष्ठ पर बने चित्र को देखकर सब बच्चे हँसने लगे। उसकी स्टिक आगे से बहुत मोटी और चौड़ी लग रही थी तो मैंने कहा, "यह हॉकी स्टिक कम और पैर का प्लास्टर ज़्यादा लग रहा है।" यह सुनते ही वह ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगा।

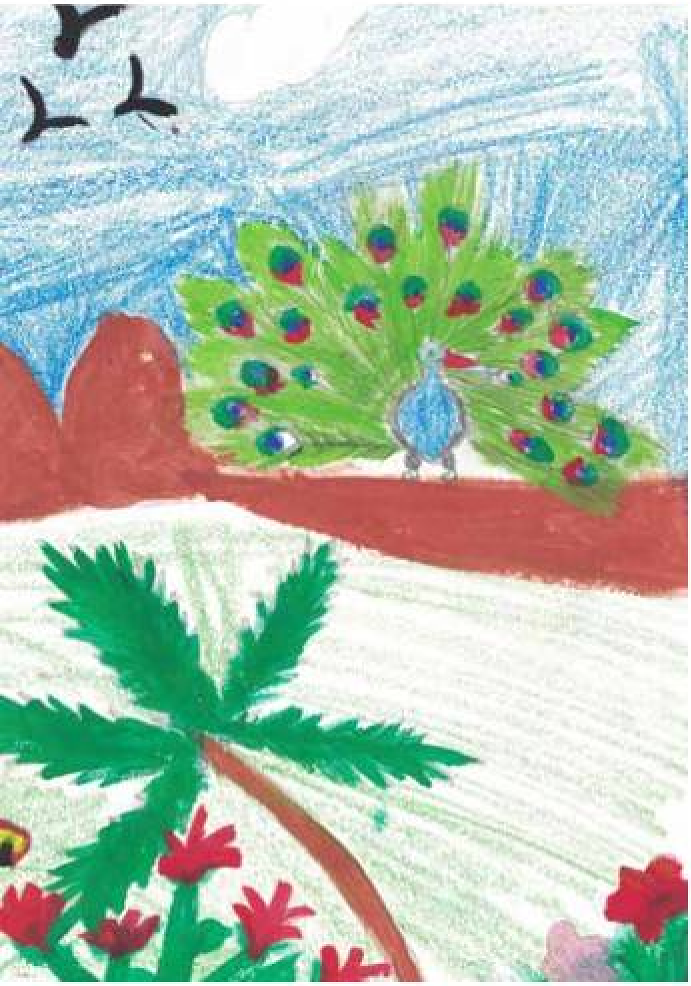

चित्र: सोनाक्षी, आठवीं, राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय, बाड़पुर, सवाई माधोपुर, राजस्थान

खेलने का मन

देव
पाँचवीं, ज्ञानदर्शन स्कूल, भोपाल, मध्य प्रदेश

एक लड़का था। उसे पतंग उड़ाने का बहुत शौक था। उसने कटी हुई पतंग देखी। वह पतंग के पीछे-पीछे चला गया। वह जंगल के बहुत अन्दर पहुँच गया। जब पतंग उसे मिल गई तब उसने देखा कि वह जंगल के बहुत अन्दर आ गया है। वह डर गया। वह घर जाने का रास्ता भूल गया था। पर वह अपने साथ एक ड्रोन लाया था। उसने उसको उड़ाया और अपने घर का रास्ता ढूँढ लिया। और फिर अपने घर चला गया।

चित्र: हर्षाली सोमेश्वर येलेवार, छठवीं, छोटूभाई पटेल हाई स्कूल, चन्द्रपुर, महाराष्ट्र

मेरा पन्ना

मुझे कालू याद आता है

रमेश
सातवीं, अज़ीम प्रेमजी स्कूल
बाड़मेर, राजस्थान

एक दिन जब मैं स्कूल जा रहा था तभी मैंने देखा कि कुछ पिल्ले रोड पर घूम रहे थे। उनमें से एक काला पिल्ला मेरे को पसन्द आ गया। मैंने उसको पाल लिया। घर लाते ही मैंने एक कटोरी में थोड़ा सा दूध उसे पीने के लिए दिया। दूध देखते ही वह मेरे पास दौड़कर आ गया। उसके लिए मेरे मन में बहुत से खयाल उभर रहे थे। मैं सोच रहा था कि वह बड़ा होकर कैसा लगेगा। मैं उसको मोटा और ताकतवर कुत्ता बनाना चाहता था। उसका नाम मैंने कालू रखा था।

थोड़े दिनों बाद मैं गाँव चला गया। जब मैं गाँव से वापिस आया तो कालू मेरे पास दौड़कर आया। उसने मेरे ऊपर हमला करने की कोशिश की क्योंकि इतने दिन ना मिलने पर वह मुझसे नाराज़ था। मैंने भी मस्ती में उसके एक लात मार दी। उसने गुस्से से मेरे पैर पर काट दिया। मैं डरकर घर भाग गया। कालू की वजह से मेरे को छह इंजेक्शन लगे।

थोड़े दिनों बाद मुझे उसकी याद आने लगी। मैंने उसे ढूँढा तो वह रोड पर मरा हुआ मिला। कालू के मुँह से खून निकल रहा था। यह देखकर मेरी आँखों में आँसू आ गए। जब भी मैं किसी और कुत्ते को देखता हूँ तो मुझे कालू याद आता है।

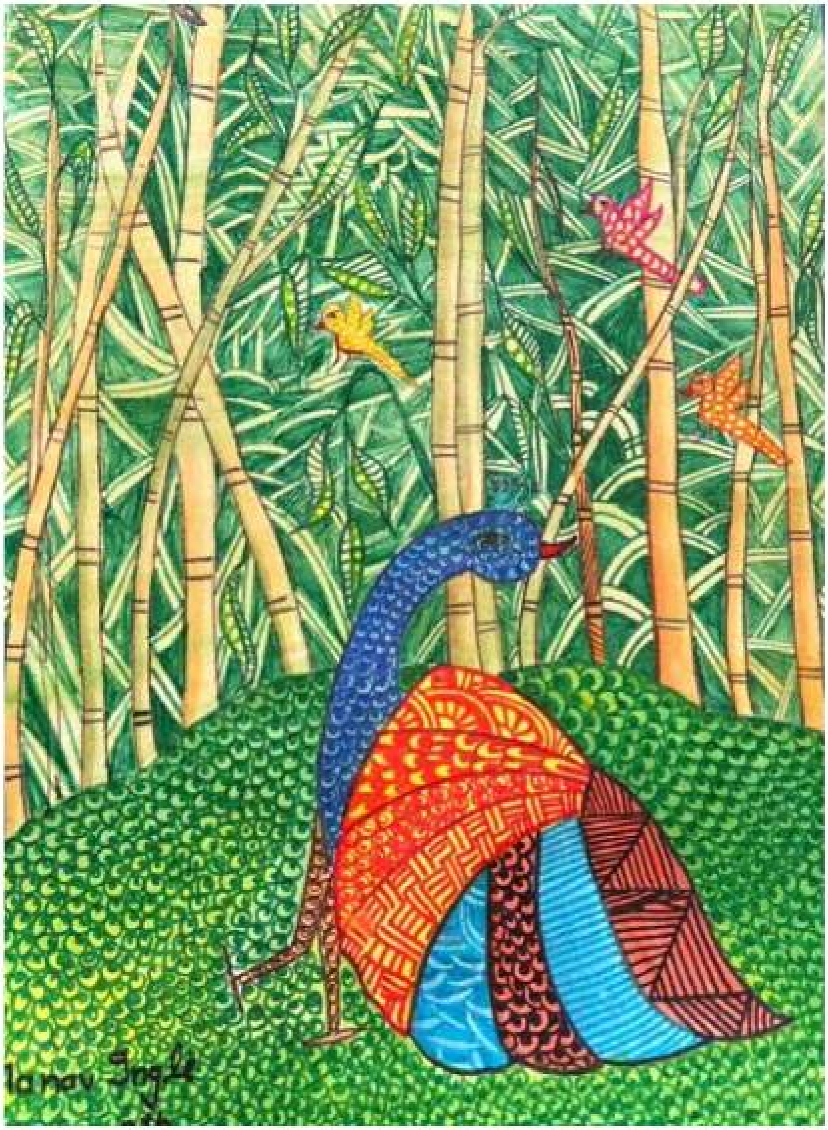

चित्र: मानव इंगले, आठवीं, शासकीय आश्रम स्कूल, अमरावती, महाराष्ट्र (स्लैम आउट लाउड संस्था से प्राप्त)

फैक्ट्री बन्द हो गई

अमरजीत
पाँचवीं, प्राथमिक विद्यालय, धर्मपुर
बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

मेरे पापा एक फैक्ट्री में काम करते थे। वो फैक्ट्री मेरे घर से बहुत दूर थी। साइकिल से जाने में लगभ दो घण्टे लगते थे। पापा सुबह छह बजे घर से निकल जाते थे, तब समय पर ड्यूटी पहुँचते थे। रात आठ बजे छुट्टी होती। घर पहुँचते-पहुँचते उन्हें रात के दस बज जाते थे। जब तक पापा आते, हम लोग जगते रहते। फिर साथ में खाना खाकर सो जाते।

उनको काम पर जाने में बहुत दिक्कत होती थी। उन्होंने घर पर सबसे कहा कि अब एक मोटरसाइकिल ले लेते हैं। बाबा ने कुछ पैसों की मदद की और मेरे पापा एक नई मोटरसाइकिल ले आए। फिर उसी से काम पर जाने लगे। इस बात से सबसे ज़्यादा खुशी मुझे हुई क्योंकि अब पापा समय से घर आ जाते थे।

लॉकडाउन में उनकी फैक्ट्री बन्द हो गई थी और काम छूट गया

चित्र: हिमांशी, तीसरी, परिवर्तन सेंटर, ग्राम बड़हुला, सिवान, बिहार

था। कोरोना काल बीतने पर पापा काम के लिए अपने एक मित्र के साथ गुजरात चले गए। अब पापा वहाँ पर टाइल फैक्ट्री में काम करते हैं। मेरे पापा को वहाँ पर महीने का पन्द्रह हज़ार रुपए मिलता है। मेरे पापा घर पर पाँच या छह महीने बाद आते हैं। और फिर एक महीने बाद चले जाते हैं।

वह खाना नहीं लाई

मितिशा
दूसरी, यश विद्या मन्दिर, फ़ैज़ाबाद, उत्तर प्रदेश

एक बार की बात है। एक लड़का था। वह एक स्कूल में पढ़ता था। एक दिन उसने एक लड़की को देखा कि वह खाना नहीं लाई है, तो उस लड़के ने उस लड़की को खाना खिलाया। उस लड़की ने फिर उसको धन्यवाद दिया।

चित्र: शर्विल दिव्यांश, पहली, बैम्बूसा लाइब्रेरी, तेज़ू, अरुणाचल प्रदेश

अँग्रेज़ी बहुत कमज़ोर है

शिवम कुमार
बारहवीं, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
छम्यार, मण्डी, हिमाचल प्रदेश

मेरा पहला पेपर अँग्रेज़ी का था। यह सैकेंड टर्म का पहला पेपर था। पेपर से पहले मैं बहुत डरा हुआ था। मेरी अँग्रेज़ी बहुत कमज़ोर है। मैंने अँग्रेज़ी की बहुत कम पढ़ाई की थी। मैंने जब प्रश्न पत्र देखा तो उसमें वो कुछ भी नहीं आया था जो मैंने पढ़ा था। मैंने सोचा उज्जवल मुझे पेपर बता देगा। मगर जब मैं पेपर लिख रहा था तो सर को लगा कि मैं उज्जवल से बात कर रहा हूँ। पर मैं उससे बात नहीं कर रहा था।

सर ने मुझे आगे बिठा दिया। आगे बैठकर मैं धूप सेंकने लगा और इधर-उधर देखता रहा। मुझे जो-जो याद आ रहा था मैं वो लिख रहा था। मैंने कुछ भी लिखा और जो लिखा भगवान भरोसे लिखा। कुछ देर बाद मैंने पेपर दे दिया। जब सब पेपर खतम हो गए और हम स्कूल गए तो सर ने पेपर देने के लिए बुलाया। सर ने मेरा पेपर मेरे सामने चैक किया। मुझे लगा मैं फेल हो जाऊँगा। लेकिन मैं पास हो गया था।

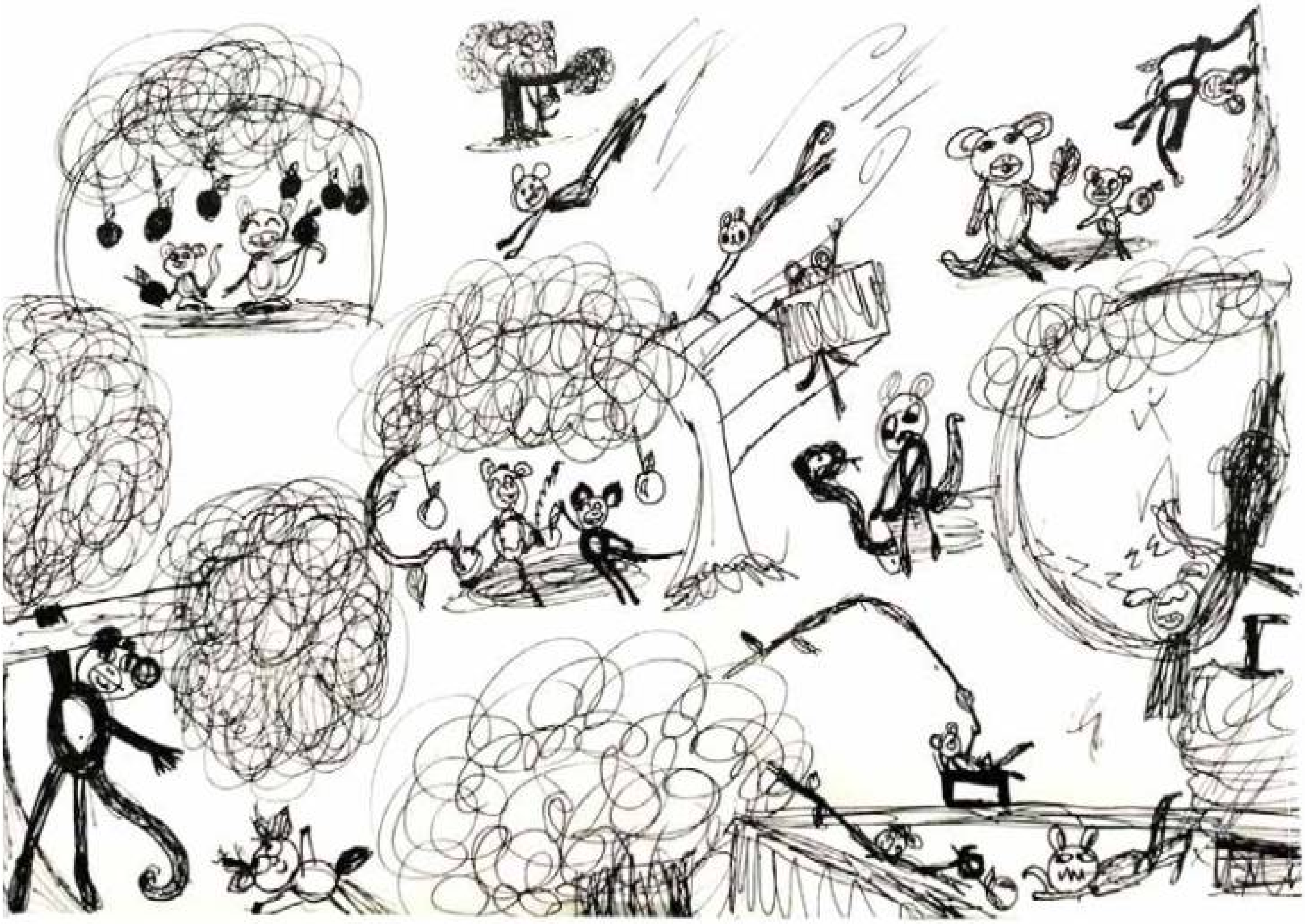

चित्र: नोआ, नौ साल, आगरा, उत्तर प्रदेश

मेरी तबीयत

आफरीन खान
सातवीं, सावित्रीबाई फुले फातिमा शेख लाइब्रेरी
भोपाल, मध्य प्रदेश

मैं आफरीन हूँ। मेरी तबीयत बहुत खराब थी। मेरे पेट में बहुत दर्द था। मुझे डॉक्टर के पास लेकर गए। फिर भी मुझे आराम नहीं लगा। मेरी अम्मी और खाला बहुत परेशान हो गईं कि मुझे ऐसा क्या हो गया। मेरे पेट में बहुत दर्द था। मैं बहुत रो रही थी। दो दिन तक मैं बहुत तड़पी और दर्द बर्दाश्त किया। तब मेरी खाला ने कहा कि एक बार किसी दूसरे अच्छे डॉक्टर को दिखाते हैं।

फिर शाम को मेरी खाला मुझे हॉस्पिटल लेकर गईं तो डॉक्टर ने बोला कि बॉटल लगेगी, तब आराम लगेगा। तो मेरी खाला ने कहा कि ठीक है। लगा दो। बॉटल लगवाने के बाद मेरे पेट का दर्द कुछ कम हुआ। मुझे अच्छा लगा। तब मेरी अम्मी और खाला मुझे अच्छा देखकर बहुत खुश हुए। अब मैं पूरी तरह ठीक हूँ।

माथापच्ची

जवाब

1.

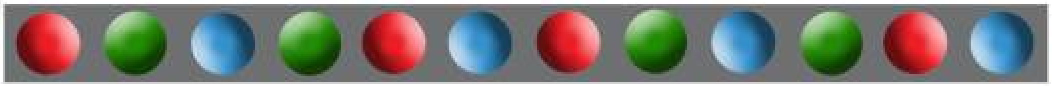

3. चार रोटियों के 3 बराबर-बराबर टुकड़े करो। बाकी की तीन रोटियों के 4 बराबर-बराबर टुकड़े करो। अब हरेक व्यक्ति को दोनों तरह का एक-एक टुकड़ा दे दो।

2. 18 चौकोर

10.

को	ठु	जी	ह	द	य	का	दो	खो
ह	ड्डी	मा	भ	ग	ट	मा	न	प
नी	ऑं	ख	पे	घु	हों	थे	ए	ड़ी
पै	म	हा	थ	ट	प	स	ली	पै
क	स्ति	पी	ग	ना	ल	द	व	त
ला	ष्क	उँ	ठ	सा	क	म	ट	पा
ई	रो	ग	ऑं	दाँ	न	क	ला	फे
ट	ख	ला	ग	ट	द	न	मा	फ
ह	थे	ली	पु	त	को	ज	ब	ड़ा

5. C वाला। ध्यान-से देखो चित्र A में बाहरी आकृति 4 भुजाओं वाली और अन्दरूनी आकृति 3 भुजाओं वाली है। B में बाहरी आकृति 5 और अन्दरूनी आकृति 4 भुजाओं वाली है। D में भी यही पैटर्न देखने को मिलता है, पर C में नहीं।

7. मीना रंगीन चॉक लेकर आई थी।
प्राची कूलर में पानी भर रही है।
पानी कल से बरस रहा है।
जूली चीनी लेने गई है।
पूजा मुनगे की सब्जी बहुत अच्छी बनाती है।
सफर मे सामान कम रखना चाहिए।
मेरा छोटा भाई बेलन को खिलौना समझकर उठा लाया।

8. क्योंकि दोनों आपस में नहीं खेल रहे थे।

9. क्योंकि जसमीत उनकी बेटी है।

शिकाकु जवाब

2	2			2
	2			2
	3			
3			4	
3			2	

4	2			3
			2	2
	2		3	
		3		2
2				

6.

2	+	4	-	1	×	6	÷	3	×	5	=	50

4.

+	×	÷	=
=	÷	+	×
×	+	=	÷
÷	=	×	+

चित्रपहेली का जवाब

1 [illegible]	[illegible]	2 [illegible]		3 [illegible]		4 [illegible]	[illegible]	[illegible]
[illegible]		5 [illegible]	[illegible]	[illegible]		[illegible]		
6 [illegible]	7 [illegible]	[illegible]			8 [illegible]	र	9 [illegible]	[illegible]
	[illegible]		10 [illegible]		[illegible]		[illegible]	
11 [illegible]	[illegible]		12 [illegible]	13 [illegible]	[illegible]		14 [illegible]	15 [illegible]
	16 र	[illegible]		[illegible]		17 [illegible]		[illegible]
18 [illegible]			19 [illegible]	[illegible]		20 [illegible]	21 [illegible]	[illegible]
र		22 [illegible]			23 [illegible]		[illegible]	
24 [illegible]	र	[illegible]		25 [illegible]	[illegible]		26 [illegible]	[illegible]

सुडोकू-98 का जवाब

9	2	4	1	8	3	7	5	6
8	5	3	2	6	7	9	4	1
7	1	6	5	4	9	3	2	8
2	8	1	7	9	5	6	3	4
3	7	9	4	1	6	5	8	2
6	4	5	3	2	8	1	9	7
4	9	2	6	5	1	8	7	3
1	3	8	9	7	4	2	6	5
5	6	7	8	3	2	4	1	9

चकमक तुम भी जानो

सुपर एल निन्यो की शुरुआत

एल निन्यो जलवायु प्रणाली की एक प्राकृतिक अवस्था है। यह तब होता है जब उष्णकटिबन्धीय प्रशान्त क्षेत्र में पूर्व से पश्चिम की ओर चलने वाली हवाएँ कमज़ोर पड़ जाती हैं। इससे प्रशान्त महासागर के पश्चिमी हिस्से में 'वार्म पूल' (गर्म पानी का विशाल क्षेत्र) में एकत्रित पानी वापस पूर्वी हिस्से की ओर बहने लगता है। गर्म पानी का यह विशाल क्षेत्र वातावरण को और ज़्यादा गर्म कर देता है। इससे वैश्विक तापमान बढ़ जाता है।

एल निन्यो के शुरू होने की आधिकारिक घोषणा हो चुकी है। इस बात की बहुत ज़्यादा सम्भावना है कि यह एक 'सुपर' एल निन्यो में बदल जाएगा। हर हाल में 2026 और 2027 के दौरान यह दुनिया भर में तापमान बढ़ाएगा और मौसम सम्बन्धी चरम घटनाओं को बढ़ावा देगा। इसका असर सभी थलीय और जलीय जीवों की सेहत पर पड़ेगा। साथ ही हिमनदियों और बर्फ के अन्य विशाल ढेरों के पिघलने से मौसम सम्बन्धी चरम स्थितियाँ और गम्भीर हो सकती हैं। इसके कारण भारत में बारिश की कमी देखने को मिल सकती है।

जिराफ पर बिजली ज़्यादा गिरती है!

बिजली ज़मीन तक पहुँचने के लिए सबसे कम रुकावट वाला रास्ता चुनती है। चूँकि जिराफ बहुत ऊँचे होते हैं, इसलिए वे बादलों और ज़मीन के बीच की दूरी कम कर देते हैं। इस कारण उन पर बिजली गिरने की सम्भावना बढ़ जाती है। अध्ययन बताते हैं कि इन्सानों की तुलना में जिराफ पर बिजली गिरने की सम्भावना लगभग 30 गुना ज़्यादा होती है। ऊँचाई के अलावा अन्य कोई कारण नहीं जो बिजली को उनकी ओर आकर्षित करता हो। जिराफ आम तौर पर सवाना (घास के मैदानों) में रहते हैं। ज़ोरदार तूफान के दौरान वे अक्सर ऊँचे और घने पेड़ों के नीचे शरण लेते हैं। ऐसे में ये पेड़ भी बिजली का निशाना बन जाते हैं।

जिराफ की तरह हाथियों जैसे दूसरे ऊँचे जानवरों पर भी बिजली गिरने का खतरा ज़्यादा होता है। छोटे जानवरों की तुलना में वे इसकी चपेट में ज़्यादा आते हैं। तूफान के दौरान कई बड़े जानवर एक ही पेड़ के नीचे खड़े हो जाते हैं। यदि उस पेड़ पर बिजली गिर जाए तो एक साथ कई जानवर मारे जा सकते हैं।

RNI क्र. 50309/85 डाक पंजीयन क्र. म. प्र./भोपाल/261/2021-23

चित्र: सिमर नोतानी, पाँचवीं, बाल भवन सोसाइटी, वड़ोदरा, गुजरात

प्रकाशक टुलटुल बिस्वास द्वारा स्वामी रैक्स डी रोज़ारियो के लिए एकलव्य फाउंडेशन, जमनालाल बजाज परिसर, जाटखेड़ी, भोपाल, मध्य प्रदेश 462 026
से प्रकाशित एवं मुद्रक आर के सिक्युप्रिंट प्रा. लि. द्वारा प्लॉट नम्बर 15-बी, गोविन्दपुरा इंडस्ट्रियल एरिया, गोविन्दपुरा, भोपाल - 462021 (फोन: 0755 - 2687589) से मुद्रित।
सम्पादक: विनता विश्वनाथन